रंग बिरंगें मनभावन डायमंड कामिक्स



डायमंड कामिक्स की गौरवशाली परम्परा में एक नई सीरीज युद्ध चित्र कथा की प्रथम कड़ी

लहू मांगे इंसाफ

3.50



बच्चों की निराली अनूठी मनभावन पत्रिका अंकुर का नया अंक

अंकुर और नाग द्वीप का खजाना

3.00

पिंकी और मुफ्त के बेर



3.50

राजन इकबाल और काले शैतान



3.50

मामा भांजा और जादुई तालाब



3.50

अंकुर बाल बुक क्लब

डायमंड कामिक्स की बच्चों के लिये नई निराली अनुपम योजना

अंकुर बाल बुक क्लब के सदस्य बनिये और हर माह घर बैठे, डायमण्ड कामिक्स, अंकुर व डायमण्ड बाल पाकेट बुक्स डाक व्यय फ्री की सुविधा के साथ घर बैठे प्राप्त करें।

डायमण्ड कामिक्स व अंकुर आज हर बच्चे की पहली पसन्द है। रंग बिरंगे चित्रों से भरपूर डायमण्ड कामिक्स व अंकुर हर बच्चा घर बैठे प्राप्त करना चाहता है इस इच्छा के सैकड़ों पत्र हमें प्रति दिन प्राप्त होते है। नन्हे मुन्नों की मांग को ध्यान में रखकर हमने यह उपयोगी योजना शुरू करने का कार्यक्रम बनायाहै। आपसे अनुरोध है इस योजना के स्वय सदस्य बने और अपने मित्रों को भी बनने की प्रेरणा दे :

सदस्य बनने के लिये आपको क्या करना होगा :—

1. संलग्न कूपन पर अपना नाम व पता भर कर हमें भेज दें। नाम व पता साफ-साफ लिखें ताकि पढ़ने में आसानी हो।
2. सदस्यता शुल्क दो रुपये मनीआरडर या डाक टिकट द्वारा कूपन के साथ भेजें।

सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।

3. हर माह पांच पुस्तकें एक साथ मंगाने पर 2/- की विशेष छूट व डाक व्यय फ्री की सुविधा दी जायेगी। हर माह हम पांच पुस्तकें निर्धारित करेंगें यदि आपको वह पुस्तके पसन्द न हों तो डायमण्ड कामिक्स व डायमण्ड बाल पाकेट बुक्स की सूची में से कोई भी पांच पुस्तकें आप पसन्द करके मंगवा सकते है लेकिन कम से कम पांच पुस्तकें मंगवाना जरूरी है।

सदस्यता कूपन

मुझे 'अंकुर बाल बुक क्लब' का सदस्य बना लें। सदस्यता शुल्क दो रुपये मनीआर्डर/डाक टिकट में साथ भेजा जा रहा है। (सदस्यता शुल्क प्राप्त न होने की स्थिति में आपको सदस्यता नहीं दी जायेगी) मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी० पी० छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूं।

नाम____________________

पिता का नाम____________________

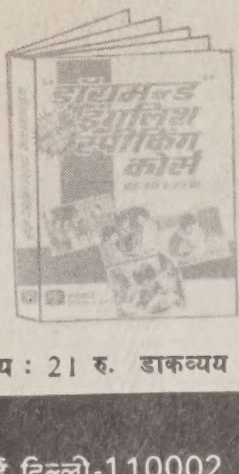
पता____________________

डाकखाना____________________

जिला____________________

अंग्रेजी बोलचाल सिखाने वाला औरों से बिलकुल भिन्न प्रभावी पद्धति पर आधारित जो आपको कुछ प्रभावी शब्द और वाक्य नहीं रटाता बल्कि अंग्रेजी भाषा की गहरायी तक पहुंचकर आपको भाषा पर पूरा अधिकार करने की विशिष्ट क्षमता प्रदान करता है।

अंग्रेजी भाषा के मर्म को गहराई से समझाने वाला एक ऐसा प्रभावी कोर्स जिसे अपनाकर आप महसूस करेंगे कि आपने वही पाया है जिसकी वर्षों से आपको तलाश थी।



डायमंड इंगलिश स्पीकिंग कोर्स

मूल्य : 21 रु. डाकव्यय : 5 रु.

डायमंड कामिक्स प्रा.लि. 2715 दरिया गंज, नई दिल्ली-110002

जूड़े बनाम मूढ़

शिशिर विक्रांत

मुहल्ले में पूरन बाबू के नाम से जाना-पहचाना जाता है, उनका वैसे शुद्ध नाम है—पूर्ण प्रकाश । यथा नाम, तथा गुण । एकदम सटीक बैठता है पूर्ण प्रकाश नाम, उनके ऊपर ।

बलिष्ठ देह । गोरा चिट्टा रंग । अच्छी शारीरिक लम्बाई । बेहतरीन नाक नक्श । भीड़ में भी अलग पहचाना जा सकता है उन्हें । बेशक कुछ देर को नजर ठहर ही जाती है, जो भी एक बार उनको देखे ।

लेकिन जैसी कि कहावत मशहूर है—चन्द्रमा में भी दाग है । खुदा की मार कहें या प्यार, पूर्ण प्रकाश जी की तमाम शारीरिक विशेषताओं के साथ, एक दाग भी है । दाग यानी उनका बहरापन । बहरापन भी विचित्र किस्म का । कभी तो हर बात एकदम साफ सुन-समझ लेते हैं । कभी बहरापन थोड़ा-बहुत असर दिखा देता है । और कभी-कभी तो हालत यहां तक पहुंच जाती है कि कान एकदम से हड़ताल कर देते हैं । उदाहरण के तौर पर, पत्नी ने कहा कि आफिस से लौटते वक्त कत्था-सुपारी लेते आइएगा । तो जनाब शाम को अपने चपरासी नत्था तिवारी को साथ ले आए, पत्नी झल्लाकर कुछ कहे, इससे पहले ही चिल्ला पड़े, "तुम्हीं ने तो कहा था । अब नत्था को ले आया, तो बेवजह बिगड़ रही हो ।"

यानी कि नीम चढ़े करेले जैसा हिसाब । खुद तो परेशान रहते ही हैं बेचारे पूरन बाबू अपने बहरेपन की वजह से पर पत्नी की परेशानी कई गुना अधिक है । अंदाज ही नहीं पड़ता कि पतिदेव के कान इस वक्त सुनने के कितने काबिल हैं ?

पूरे बहरेपन के क्रम में यदि कभी चिल्लाकर कुछ कहें, और उस वक्त पूरन बाबू का बहरापन असर न दिखा रहा हो, तो गुस्से से बोखला उठते हैं । पत्नी को डांट उठेंगे, "इतनी जोर से बोलकर सारे मुहल्ले को सुना रही हो क्या ? तुम क्या समझती हो, मैं कोई बहरा हूं ? तुम्हारी इतनी जोर-जोर की आवाज सुनकर, एक दिन मैं जरूर बहरा हो जाऊंगा । तुम तो खैर मनाती हो कि मैं बहरा हो जाऊं ।"

और जब पत्नी उस वक्त कुछ कहे, जब पूरन बाबू के कान 'नो वर्क' ठान कर बैठे हों तब भी बिगड़ उठते हैं, खाना नहीं खाती हो क्या ? जो मुंह से आवाज ही आनी बन्द हो गई है । खूब बहाना ढूंढ़ रखा है तुमने, मेरा मजाक बनाने का ।'

बेचारी पत्नी एक मन से हंसती हैं, तो दूसरे मन से सिर पीट लेती हैं ।

उन दोनों के लिए, बहरापन बेशक एक मुसीबत है । लेकिन मुहल्ले के बच्चे जवान बूढ़ों तथा दूसरे परिचितों के लिए हंसते हंसते लोट-लोट जाने की, एक दुरुस्त वजह।मजा लेने वाले, उन्हें पूरन बाबू के बजाए, चूरन बाबू ही कहते हैं ।

कुछ ही दिन हुए तरकारी लेने सब्जी मंडी गया था मैं । मंडी में जैसे ही घुसा दूर खड़े पूरन बाबू नजर आए, एक कुंजड़े यानि सब्जी बेचने वाले से सब्जी खरीद रहे थे जनाब । नजदीक जाकर उनके कंधे पर पीछे से थपकी दी तो वो मुड़े, मुझे देखकर मुस्कराए, मैंने भी जबाबी मुस्कान पेश कर दी ।

फिर पूछा, कैसे हाल-चाल हैं ?'

'हं-हं···भाटा-भाटा ।' पूरन बाबू अपने हाथ में लिये एक काले मोटे बैंगन को मुझे दिखाते हुए, तनिक मुस्कराकर बोले ।

मुझे हंसी आई, उनका उत्तर सुनकर पर जैसे तैसे हंसी पी गया 'अच्छा-अच्छा' कहकर पूछा मैंने, "भाभी जी तो बहुत दिनों से दिखी ही नहीं, कैसी हैं अब वो ?"

"सिर्फ ढाई रूपया किलो" तपाक से बोले पूरनबाबू,मेरे सवाल के जबाब में ।

बहुत तेजी से हंसी का बगूला, मेरे दिल-दिमाग में उठा।यह सुनकर । ठट्ठा जबान तक आ गया । पर बड़े साहस से, अपने दांतों को मैंने भींच लिया । न मुंह खुलने दिया, न हंसी निकलने दी । यही सोचकर कि पूरन बाबू बुरा न मान जायें ।

वहां से चल देना ही मैंने भला समझा. 'बहुतठीक' कहकर, चलते-चलते भी मुंह से निकल ही पड़ा, "अन्नी रिक्कू के क्या हाल-चाल हैं ?" बच्चे हैं, अन्नी रिक्कू उनके ।

"अजी, यह भी बताने की बात है, "कुछ तेजी से बोले वो, 'बस, घर पहुंचते ही भरता बनवा दूंगा ।'

अब किसी भी हाल में मेरी हंसी रुकने वाली नहीं थी । मेरे साथ सब्जी वाला भी ठट्ठा मारकर हंस पड़ा । और साथ ही हंसने लगे, हमारे ऊट-पटांग सवाल-जवाब सुनकर, अगल-बगल खड़े लोग । इस बेवजह-बेवक्त की हंसी की वजह पूछने के बजाए, पूरन बाबू भी हंस दिए । समझ गए थे कि बहरेहन में, उनसे जरूर कोई गड़बड़ हो गयी है ।

तो ऐसे हैं, पूरन बाबू, समय-असमय खूब मजा लगाया करते हैं दूसरों को बेदाम की हंसी देकर, खुद भी हंसने से नहीं चूकते।बड़ी बात तो यह है कि पत्नी के सिवा, किसी की भी बात का बुरा नहीं मानते । यही कारण है कि लोगों के चहेते हैं ।

अभी पिछले सप्ताह की बात है । किसी जरूरी काम से उनको अपने ससुराल जाना था । सूटकेस, बिस्तरबंद, झोले वगैरह संभालकर, रेलवे-स्टेशन जाने के लिए, घर से निकले तभी उनकी पत्नी को ध्यान आया ।

समझा कर उनसे बोलीं, "सुनोजी, वहां से लौटते समय एक काम कर आना पिछली साल जब गयी थी, तब दोनों जूड़े वहीं मायके में छोड़ आई थी । मम्मी से बता देना । कहीं रखे होंगे, निकाल कर दे देंगी दोनों जूड़े, एक छोटा है, दूसरा बड़ा है।"

पत्नी की बात सुनकर, पूरन बाबू ने 'ठीक है' के अंदाज में सिर हिला दिया ।

"अच्छी तरह समझ गए न ? जूड़े-जूड़े" पत्नी ने जरा जोर से कहा आश्वस्त होने के लिए ।

शेष पृष्ठ ६ पर

आपका भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा।

मेष : यह सप्ताह पहले से कहीं अधिक लाभप्रद एवं अनुकूल रहेगा, उत्साह बढ़ेगा और काम-काज की व्यस्तता में दिन अधिक व्यतीत होंगे, किए कामों के सुपरिणाम प्राप्त होने लगेंगे, लाभ अच्छा होगा।

वृष : सप्ताह है तो अच्छा फिर भी सफलता के मार्ग में कुछ बाधायें पेश आयेंगी या परिश्रम फल देर से मिलेगा, कोई अप्रिय घटना भी संवाभित है, स्थायी काम धन्धों से लाभ होता रहेगा।

मिथुन : कारोबार में नवीनता लाने और सुधार करने पर विचार करेंगे, नई योजना पर व्यय एवं उन्नति भी होगा, परिश्रम काफी करना पड़ेगा, कुछ समस्यायें सामने आयेंगी।

कर्क : काफी संघर्षमय दिन हैं, कठिनाई भी काफी पेश आएगी, जिसके कारण घरेलू एवं व्यापारिक वातावरण भी उलझ सकता है, स्थाई काम-धन्धे से लाभ होता रहेगा, यात्रा सावधानी से करें।

सिंह : कोई महत्वपूर्ण काम जिससे आपको लाभ की आशायें बंधी हुई हैं, पूरा न हो सकेगा, समय काफी तनावपूर्ण हालात में गुजर रहा है, परेशानी भी नए-नए रंग बदल कर सामने आ रही हैं।

कन्या : कुछेक समस्यायें या परेशानियां आपके गुस्से के कारण ही पैदा होंगी, ये दिन संघर्षमय हैं, फिर भी परिश्रम एवं प्रयास करने पर सफलता मिल जाएगी, फल भले ही कुछ देर से मिले।

तुला : यह सप्ताह आपके लिये पर्याप्त अच्छा है, कामकाज में आप विशेष उन्नति एवं सुधार कर लेंगे, जिससे लाभ भी अच्छा होने लगेगा, सफलता प्राप्ति में कुछ बाधायें तो अवश्य आयेंगी।

वृश्चिक : इन दिनों आपकी सेहत बिगड़ सकती है, वैसे ये दिन काफी दिलचस्प हैं, संघर्ष आयेंगे लेकिन सफलता मिलती रहेगी और समय भी अच्छा व्यतीत होगा, यात्रा सम्भावित है।

धनु : ये दिन आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगा और अनेक समस्याओं का समाधान हो जायेगा, कामकाज एवं घरेलू वातावरण भी सुधरेगा, किये कामों के शुभफल प्राप्त होंगे।

मकर : अच्छी आमदनी होने के आसार नजर आयेंगे, लाभ भी बढ़ेगा परन्तु आप धन एवं समय का सदुपयोग न कर सकेंगे, कोई नई उलझन पैदा होगी, सम्पति आदि में कामों में सफलता मिलेगी।

कुम्भ : पखवाड़ा पहले से काफी अच्छा कहा जा सकता है, इस दौरान आप कई महत्वपूर्ण परिवर्तन होते महसूस करेंगे, लाभ भी अच्छा होने लगेगा। कारोबार की हालत भी सुधरेगी।

मीन : कोई विशेष समस्या या उलझन अब दूर होती जाएगी, वातावरण में भी काफी परिवर्तन आ जायेगा, व्यापार की हालत सुधरेगी, आमदनी आशा अनुसार होती रहेगी।

आपके पत्र

दीवाना का अंक 21 काफी इन्तजार के बाद प्राप्त हुआ। इस अंक में सभी लेख तथा फीचर सराहनीय थे। कहानी 'नर्कलोक में विद्रोह', 'बुढ़ापे में शादी' पढ़कर मन गार्डन-गार्डन हो गया। लल्लू राजा जी, गरीबचंद की डाक अच्छे लगे। आपसे अनुरोध है कि प्रत्येक अंक में 'आपस की बात' जरूर दिया करें।

अजिन्द्र सिंह 'चुघ'—शाहदरा

दीवाना का झूमता खूबसूरत नया अंक 21 बहुत जल्दी मिल गया। बेहद सुन्दर अंक था। मुख पृष्ठ पर चिल्ली को एशियाई खेलों की मशाल उठाकर दौड़ते हुये दिखाया बहुत अच्छा लगा। अन्दर ऐशियाई खेलों का पूरा विवरण व कैलेंडर देकर आपने बहुत अच्छा किया, इसके लिए आपको धन्यवाद। आपसे अनुरोध है कि किसी निकटतम अक में रति या पद्मिनी कोल्हापुरे का पोस्टर देने का कष्ट करें।

राजेन्द्र बठला—कलानौर

नया अंक प्राप्त हुआ, पढ़कर मजा आया। 'राजाजी' और 'लल्लू' ने पत्रिका में चार चांद लगा दिये। हास्य रचना 'हमने धर्मराज का रिकार्ड जलाया' बहुत पसन्द आयी। चना कुरमुरा और मिल-बिल-पिलपिल भी मजेदार थे। अगले अंक की प्रतीक्षा में।

अर्चना चिन्टू अग्रवाल— हापुड़

अंक नं० 20 मिला, सभी फीचर बहुत पसन्द आये। कहानी 'लक्ष्मी जी की कांफ्रेंस' बहुत अच्छी लगी। सिलदिल-पिलपिल का कलर टी. वी. पढ़कर तो मजा आ गया। फिल्मी ड्रामा पढ़कर तो फिल्म देखने की जरूरत ही नहीं पड़ती। कुल मिलाकर यह अंक बहुत ही बढ़िया अंक था। **नीरज सीमा निगम—हापुड़**

मैं आपकी पत्रिका दीवाना का गत 13 वर्षों से पाठक हूं। परन्तु आज पहली बार पत्र लिखने पर मजबूर हुआ हूं। आप कृपा करके दीवाना समय पर निकालें व अंक 19-20 की तरह संयुक्तांक निकालकर समय से पहुंचायें। कृपया कुछ पुराने फीचर 'काका के कारतूस' व 'पाठकों की समस्याओं के दीवाने सुझाव' पुनः प्रारम्भ कर दें। सम्पादक जी एक बात बताने का कष्ट करें कि आपके विशेष फीचर व कार्टुन बनाने वाले आर्टिस्ट का नाम क्या है। इसके अतिरिक्त कृपया मोटू-पतलू पुन: प्रारम्भ करें।

अखिल कुमार सिंह—अलीगढ़

उनका नाम श्री बी. एस. नेगी है।

—सं०

दीवाना अंक 20 प्राप्त हुआ, पढ़कर हर्ष हुआ। इस अंक में लक्ष्मी जी की प्रेस कांफ्रेंस कहानी हास्यप्रद लगी। सिलबिल पिलपिल और चना कुरमुरा पसन्द आया और गरीबचन्द की डाक के सभी उत्तर मजेदार व दिलचस्प थे। 'तेरी मांग सितारों से भर दूं' फिल्म की कहानी पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ।

सुखविन्दर जौड़ा—कृष्णा पार्क

मुख पृष्ठ पर

नहीं मिली जब टिकट चिल्ली को
शुभारम्भ समारोह एशियाड की
बहुत सोच विचार किया तब
युक्ति निकाली एक लाख की।
चिल्ली लाया बैलून बहुत से
उड़ने की तरकीब बनाई
बैठा उड़न झूले पर देखो
सबने चिल्ली को दी बधाई॥

दीवाना

अंक : 24 वर्ष : 18 15-31 दिसम्बर 1982

सम्पादक : विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका : मंजुल गुप्ता
दीवाना तेज पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा	:	२७ रुपये
अर्द्ध वार्षिक	:	१४ रुपये
एक प्रति	:	१.५० रुपये

पृष्ठ ६ से आगे

"हां-हां, खूब समझ गया । खूब अच्छी तरह से समझ गया । जरूर लेता आऊंगा । चिल्लाओ मत" और जोर से बोलकर पूरन बाबू रिक्शे में बैठ चल दिए ।

ससुराल पहुंचे काम-धाम निबटाया तीसरे दिन वहाँ से रवानगी के वक्त,पत्नी का कहा ध्यान आया । सास के पास



जाकर फुसफुसाते हुए बोले, ''सुषमा ने दोनों मूंढ़े मंगवाए हैं ।"

"मूढ़े ? कैसे मूढ़े ? सरकन्डे वाले मूढ़े ?" उनकी अजीब सी बात पर, सास चौंकीं । माथे पर सलवटें डालकर बोलीं "लेकिन वह क्या करेगी,मूढ़ों का ?"

"जो भी करे । मंगवाए वही सरकंड़े वाले मूढ़े हैं।चलते-चलते खूब दवाब से कहा था मुझसे", बोले पूरन बाबू ।

"लेकिन बेटा, यहां से मूढ़े ले जाने की क्या जरूरत पड़ गई ? तुम्हारा शहर तो काफी बड़ा है । वहां नहीं मिलते क्या मूढ़े ?

"अगर मिलते होते तो सुषमा यहीं खरीदकर, क्यों छोड़ जाती ?" पूरन बाबू सास की बात सुन तनिक खीज कर बोले ।

"यहीं खरीद कर छोड़ गई थी ?"

दामाद का चेहरा अचरज और अविश्वास से ताकती हुई सास बोलीं, "मुझे कुछ समझ नहीं आ रहीं तुम्हारी बात कौन से मूढ़े खरीद कर छोड़ गई थी ?"

"दो मूढ़े थे जी" पूरनबाबू की झल्लाहट कुछ और बढ़ी, बोले, बड़े कायदे से समझाते-ध्यान दिलाते हुए, "एक छोटा था, एक बड़ा सुषमा ने कहा था आपने उनको कहीं रख दिया होगा निकाल कर दे दीजिए,उनके बिना वहां बड़ी परेशानी होती है ।' आखिरी वाक्य उन्होंने अपने मन से जोड़ दिया । ताकिं बात ठोस लगे ।

"इतने बड़े-बड़े मूढ़े, संदूक बगैरह में तो रखे नहीं जा सकते बेटा' कुछ परेशान स्वर में बोली सास, होते तो घर में ही दिखाई पड़ते । तुमसे ही तो कुछ भूल नहीं हो रही ?

"अरे वाह जी, सुषमा झूठ बोलेगी या मैं ?" गुस्से और झल्लाहट से, कुछ गरम होकर पूरन बाबू बोले, 'रख गई होगी तभी तो मंगवाए हैं ।'

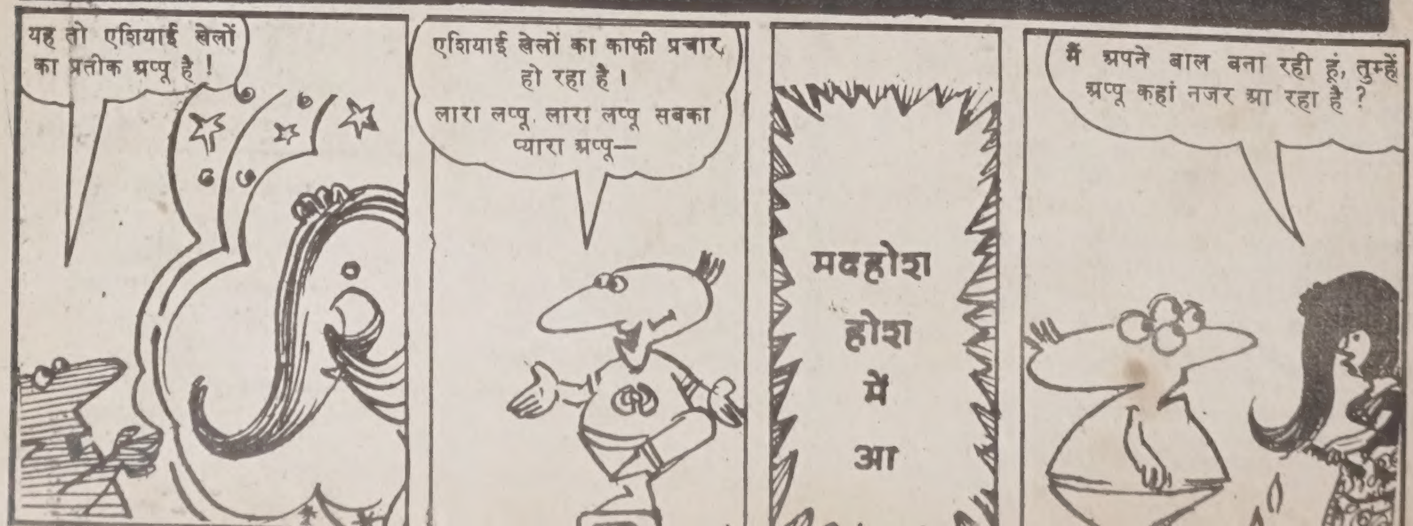
बेचारी सास, जिद सी ठाने दामाद को कैसे समझाती ? हारकर, बाजार से फौरन ही दो मूढ़े मंगवाए एक बढ़ा, एक छोटा ।

बड़े-बड़े दो मूढ़ों को लाने में, पूरन बाबू की हुलिया बेरंग हो गई । भीड़ भरी रेलगाड़ी में, जहां यात्रियों को हो जगह मिलनी मुश्किल हो जाती है विशाल काय मूढ़ों का लाना, बेशक बहुत बड़ा सिरदर्द है । ऊपर से डब्बे के हर यात्री की उल्टी-सीधी बातें सुननी पड़ीं । टी. टी. आई महोदय के आपत्ति करने पर, उन्हें भी दक्षिणा देकर किसी तरह चुप करना पड़ा ।

घर सही-सलामत पहुंचकर तमाम झेली हुई परेशानियों की खीज पत्नी पर उतारते हुए, पूरन बाबू ने जब सारी बातें बतायीं तो पत्नी ने सिर पीट लिया । माथा ठोंकते हुए जब बताया कि मूढ़े नहीं, जूड़े मंगवाए थे. तो पूरन बाबू अपनी इस घनघोर मूर्खता पर पानी पानी हो गये ।

फिर अपनी झेंप मिटाने को हंसते हुए बोले, 'चलो जो हुआ, ठीक हुआ, जूड़ों से तो सिर पर भार बढ़ता, मूढ़ों पर बैठने से तो आराम ही मिलेगा ।' पत्नी भी झल्लाई हंसी हस दी,करती भी क्या ?

मदहोश



निःशुल्क प्रवेश

दीवाना कॅमल
रंग प्रतियोगिता

पुरस्कार जीतिए

कॅमल

पहला इनाम (१) रु. ३०/-
दूसरा इनाम (३) रु. २०/-
तीसरा इनाम (१०) रु. १०/-
१० प्रमाणपत्र

दीवाना

५ आश्वासन इनाम



इस प्रतियोगिता में १२ वर्ष की उम्र तक के बच्चे ही भाग ले सकते हैं. ऊपर दिये हुए चित्र में पूरे तौर से कॅमल कलर्स रंग भरिए और उसे निम्नलिखित पते पर भेज दीजिये :

दीवाना, ८-बी, बहादुर शाह जाफर मार्ग, नई दिल्ली ११०००२.

जजों का निर्णय अंतिम और सभी के लिए मान्य होगा. इस विषय में कोई पत्र-व्यवहार नहीं किया जायेगा.

कृपया कूपन केवल अंग्रेजी में भरिए.

नाम .... उम्र ....

पता ....

....

प्रवेशिकाएं 15-1-83 से पहले भेजी जायें.

CONTEST NO.27

ऐतिहासिक कथा

दोस्ती हो तो ऐसी

रचना गोस्वामी

नागपुर के पेशवा बाजीराव के दो सैनिक सहयोगी—होल्कर और शिन्दे—सदा उनके साथ रहते थे। वे एक तरह से उनकी दो भुजायें थीं। पेशवा बाजीराव जहां कहीं भी जाते उन्हें अपने साथ ले जाते। चाहे राज दरबार हो या शिकारगाह, उनके साथ दोनों सहयोगी आवश्यक रूप से रहते। आस-पास की रियासतों और हुकूमतों में यह बात फैल चुकी थी। पेशवा की दुश्मन हुकूमतों या रियासतों में इस बात का मजाक भी उड़ाया जाता और प्राय: कहा जाता कि शिन्दे और होल्कर के अभाव में पेशवा बाजीराव कुछ भी नहीं हैं। पड़ोसी राज्य और निजाम मन में यह बात जानते थे कि शिन्दे और होल्कर बड़े वीर योद्धा हैं। अतः वे पेशवा की इन ताकतों से भयातुर भी थे।

एक बार गुजरात के निजाम ने दरबार में बातचीत के दौरान अपने सहयोगियों से कहा—'मैं समझता हूं कि शिन्दे और होल्कर के बिना पेशवा बाजीराव एक परकटे परिन्दे की तरह है जो केवल तड़प सकता है, उड़ नहीं सकता। निजाम के चेहरे पर एक व्यंग्यपूर्ण मुस्कराहट दौड़ पड़ी।

सहयोगी ने निजाम के कथन की पुष्टि करते हुए कहा—'आप बिल्कुल वजा फरमाते हैं। भला उनके बिना पेशवा की ताकत क्या है। लेकिन हुजूर, वे तो सदा की उसके साथ रहते हैं।'

निजाम ने हल्के से मुस्कराकर पूछा—'हमें कभी यह आजमाकर देखना चाहिए।'

'बहुत नेक ख्याल है आपका। लेकिन हुजूर ने इसके लिए क्या सोचा है?' सहयोगी ने सहज जिज्ञासा प्रकट करते हुए निजाम से पूछा।

'यह हम जानते हैं।' निजाम ने अपने सहयोगियों से इस सम्बन्ध में और अधिक विवाद नहीं किया और कुछ सोच विचार करके पेशवा बाजीराव को एक पत्र लिखवा भेजा। अपने इस पत्र द्वारा निजाम ने बाजीराव पेशवा को शुभ कामकायें भेजीं और औरंगाबाद के निकट सतारा में एक शानदार दावत में उपस्थित होने के लिए निमंत्रित किया। पत्र में यह भी लिख दिया गया कि यह दावत खुशी और दोस्ती बढ़ाने के लिए की गई है, अतः उसमें पेशवा केवल अपने पांच साधारण सेवकों के साथ आ सकेंगे। किसी प्रकार की सैनिक तैयारी के साथ नहीं।

निजाम को सन्देह था कि इस शर्त के साथ पेशवा उनकी दावत का निमंत्रण स्वीकार कर लेंगे। क्योंकि इस दावत में शिन्दे और होल्कर उनके साथ नहीं आ सकेंगे। उनका विचार था कि अगर पेशवा ने दावत में आना अस्वीकार कर दिया तो उन्हें सरेआम कायर और डरपोक कहने के लिए स्वतंत्र हो जायेंगे, किन्तु जब पेशवा ने उनका निमंत्रण और शर्त स्वीकार कर ली तो निजाम के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। यह सब उनके अनुमान के विपरीत निकला।

दावत की निश्चित तारीख को निजाम द्वारा सतारा में एक शानदार शामियाने के अन्दर पेशवा के स्वागत सत्कार की तैयारी की गई। पेशवा समय पर अपने पांच साधारण सेवकों के साथ वहां पहुंचे। पेशवा का मस्तक गर्व से उठा हुआ था। उसकी आंखों में विश्वास की चमक खेल रही थी। वे बल्कुल निर्भय दिखाई दे रहे थे। स्वयं सैनिक वेश में अवश्य थे, किन्तु होल्कर और शिन्दे कहीं दिखाई नहीं दे रहे थे।

निजाम ने इस अवसर पर मित्र रियासतों के अन्य राजाओं एवं मेहमानों को भी बुलाया था। साधारण औपचारिकता के बाद पकवानों और फलों की दावत शुरू हुई। सभी हंसी खुशी भोजन करने में लग गये। निजाम और पेशवा एक दूसरे के पास बैठे थे। एकाएक निजाम अपनी जगह से उठ खड़े हुए और बाजीराव की ओर व्यंग्यपूर्ण ढंग से देखकर बोले—जानते हो पेशवा, इस समय तुम्हारी जिन्दगी हमारे हाथों में है, हम चाहें तो तुम्हे कैद कर सकते हैं। यहां तुम्हारी मदद के लिए शिन्दे और होल्कर नहीं आ सकते। तुम्हारी आवाज भी उन तक नहीं पहुंच सकती।

दावत में कुछ क्षण के लिए एकदम चुप्पी छा गई। निजाम का एकाएक यों कहना सबको आश्चर्यजनक लगा। पेशवा बाजीराव ने निजाम की बात को बिल्कुल साधारण ढंग से लिया। वे सामने खड़े होकर गर्व के साथ बोले—भूल रहे हो निजाम, शिन्दे और होल्कर तो मेरी ये दो भुजायें हैं। भला वे अलग कैसे रह सकते हैं?

निजाम एक कुटिल हंसी हंसा और बोला—'आपका क्या मतलब है? ... अगर शिन्दे और होल्कर आपकी दोनों भुजाए हैं, तो वे दिखाई क्यों नहीं देती हैं?'

तभी पेशवा ने अपने दोनों हाथों से दो बार ताली बजाई। दावत में आए सभी मेहमानों की आंखें खुली की खुली रह गयीं। उन्होंने देखा कि पेशवा के साथ आए हुए पांच साधारण सेवकों में से दो सेवक दौड़ कर पेशवा के करीब आ गये और दोनों ने अपनी-अपनी तलवारें म्यान से खींच लीं। ये शिन्दे और होल्कर ही थे जो पेशवा की सहायता के लिए उनके साथ साधारण सेवक बनकर भी गये थे।

शामियाने में एक विचित्र प्रकार का आतंक छा गया। निजाम ने दोनों के ओजस्वी चेहरे और फड़कती भुजाओं को देखा, तो भयातुर हो उठा। उससे कुछ भी कहते नहीं बना। पेशवा, शिन्दे, होल्कर तथा उनके सेवक शान के साथ नवाब की दावत खाकर अपने महल में लौट आये।



मोटू पतलू
चिराग़-ए-चीन



कहानी एवं चित्रांकनः- रघुबीर सिहँ

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि पतलू किस चालाकी से चुड़ैल जादूगरनी की प्रशंसा करके बच जाता है। मगर उसके दोस्त मोटू-गदहा, घसीटा-कुत्ता, चेलाराम- तोता बन जाते हैं। पतलू अब अपने तीनों दोस्तों को असली रूप में लाने के लिये चुड़ैल से प्रार्थना करता है-------------।





आओ अब यहाँ से भाग चलें।
अचानक एक पेड़ से आवाज़ आती है।
अरे भाईयो कहाँ जा रहे हो मुझसे तो मिलते जाओ।
भागो ऽऽऽऽ।
भूत ऽऽऽऽ।
भागो ऽऽऽऽऽ।
भू भूऽऽऽ त...
वे भागते- भागते काफी दूर निकल आते हैं और एक पेड़ के नीचे आराम करते हैं।
चलो कुछ आरांम तो कर लिया।
चुप कर बे-गुर्र-र-र। कुत्ते की औलाद तुझे आराम की पड़ी है। मैं भूख से मर रहा हूँ!
अबे गदहे रात को तो तू असली रूप में आ जायेगा। जंगल में जाकर घास खा लेना तेरा पेट भर जायेगा।
अरे मुर्खों, भुखमरों, कसाईयों वह मोटू गदहा रात को घास खा लेगा और तू गंद खा लेगा। ये तोते की औलाद कीड़े- मकोड़े खा लेगा लेकिन मैं क्या खाऊँगा! अगर मैं भूख से तड़फ- तड़फ कर मर गया तो ये कुत्ता मेरी बोटियाँ नोच- नोच कर खायेगा! बू हू हू-- बू हू हू हू!


अचानक ही बारीक-बारीक हँसने की आवाज़ आती है। एक हड्डियों का कंकाल हाथ में थाली लेकर उनके आगे प्रकट होता है।
आप हमारे मेहमान हैं। हम आप के लिये खाना लाये हैं।
मारे गये, हमसे क्या मतलब।
ईईईईई ऽऽऽऽ आप गौर से देखिये। आपके चारों ओर हम ही हम हैं।
अबे मोटू मैं तो डर से मर जाऊँगा।
कोई बात नहीं मरने के बाद अपने इन भाई-बंधुओं के साथ रहोगे।
अबे फिर क्या! पहले खाना खाओ मरना करना बाद में देख लेगें।
मरना तो है ही फिर क्यों न खाना खाकर मरा जाये।
चलो आओ खाना खा लें।
खाना तो अकबर होटल का लगता है।
नाथ, यदि आप कहें तो लोधी होटल का वैजिटैरियन खाना ला दें।
अरे वाह! हम तीनों को भाभी मिल गई। गले मिल लो। पाँव छू लो भाभी के!
आपने मुझे भाभी कहा अब मैं तुम्हें नहीं जाने दूँगी।
भाभीजी, हमें छोड़ दो और अपने नाथ को रख लो।
इतनी देर में तीन कंकाल और आते हैं।
भाभीजी ये कौन हैं?
ये मेरी सखियाँ हैं ये तुम तीनों से शादियाँ करेंगी और हम चारों परिवार मिलजुलकर रहा करेंगे।
रात को हमारे असली रूप देखकर खुद भाग जायेंगी।



हमें आपजैसी इतनी खूबसूरत सुंदरियाँ कहाँ मिलेंगी।
हम पहले ही एक सुंदरी को पीछे छोड़कर आये हैं और यहाँ फिर सुंदरियाँ मिल गई हैं
मुझे तो यहाँ सुंदरियाँ ही सुंदरियाँ दिखाई दे रही हैं!
पिछले जन्मों का पुण्य है जो ये सुंदरियाँ हमें मिल रही हैं।
भाभी जी हमारी एक प्राबलम है।
कहिये देवर जी मैं तुम्हारी तमाम समस्यों को सुलझा सकती हूँ।
भाभी जी मैं रात को कुत्ता, मोटू गदहा और चेला तोता बन जाता है। आप हमें इस श्राप से मुक्त होने का तरीका बतायें
ये तो कोई मुश्किल काम नहीं। लेकिन हम अपनी सीमा से बाहर नहीं जा सकते।
यदि तुम दक्षिण दिशा की ओर महाराज उल्लू सेन के राज्य में जाओ तो उसकी सुपुत्री उल्लू की बेटी जिसका वज़न बिमारी की वजह से घटकर एक हजार किलो से नौ सौ निन्यानवे किलो रह गया है। महाराज उल्लू सेन इसी चिंता में डूबे हुये हैं। यदि तुम वहाँ जाकर उसका वजन एक हजार कर दो तो महाराज उल्लू सेन खुश होकर चिरागे-ए-चीन की मदद से तुम्हें श्राप मुक्त कर देंगे।
भाभीजी, चिराग-ए-चीन से ये कैसे मुक्त होंगे?
महाराज उल्लूसेन अगर चिराग-ए-चीन को अपने जूते में रखकर तुम तीनों को सौ-सौ बार जूते मारें तो तुम तीनों श्राप से मुक्त हो जाओगे।
ये जो सामने पेड़ है। इसके पाँच पत्ते उस उल्लू की बेटी को खिला देना।
इससे क्या होगा?
इन पत्तों के खाने से उसे खूब भूख-प्यास लगेगी जिससे वह नाश्ते में ढाई मन पानी, साठ दर्जन अंडे और लंच में साठ बकरे, इक्कीस मुर्गे, पच्चीस तली हुई मछलियाँ खायेगी। वैसे वो माँस ज्यादा पसंद नहीं करती। बाकी वो सब्जी और दाल पर ही गुजारा कर लेगी। ये इन पत्तों की करामात है।
हमारे पहुँचने से पहले कहीं उल्लू की बेटी कमजोरी की वजह से मर तो नहीं जायेगी। जिससे हम गदहा, कुत्ता और तोता ही बने रहें।
नहीं मेरे प्यारे देवरों तथा नाथजी, महाराज उल्लू सेन ने उसके इलाज के लिये दुनिया के मशहूर डा० झटका को बुलाया है।
डार्लिंग, मैं बहुत जल्दी आने की कोशिश करूँगा।
भाभीजी, अगर डा० झटका इलाज कर रहा है तो हमारे पहुँचने से पहले ही उसका झटका हो जायेगा।


आप रात को यहाँ आराम से सो जाओ सुबह अपने-आप को उल्लू-सेन के राज्य में पाओगे। ये हमारी करामात है।
DELITE TENT HOUSE
आपसब इस टैंट में सोजायें।
वो चारो एक टैंट में सो रहे होते हैं तभी उनके कानों में आवाजें आती हैं।
उठ बे कुंभकरण की औलाद, महाराज उल्लू सेन आ गये हैं।
महाराज उल्लू सेन की जय! खबरदार, होशियार। महाराज उल्लू सेन की सवारी चार अजनबियों को देखने आ रही है।
आगये हैं तो क्या हुआ। हम उनका जूतों से स्वागत करें। मुझे सोने दे घड़ियाल।
ये कौन अकलमंद अजनबी है जो हमारा जूतों से स्वागत कर रहा है। इस को हमारे रीति-रिवाज का कैसे पता चला? ये तो कोई महान आदमी है! इसके गले में पाँच जूतों का हार डालना चाहिये।
अब मर गये!
अब नहीं बचेंगे!
अब इतने जूते लगेंगे कि चारों जमीन में धंस जायेंगे।
मोटू हाथ जोड़ कर खड़ा होता है।
महाराज मुझे माफ कर दो मैं तो गदहा हूँ।
नहीं, तुम बहुत समझदार आदमी हो।
महामंत्री, डाल दो पाँच जूतों का हार इसके गले में!
महाराज इसे माफ कर दें।
अरे हमारे राज्य का नोबल पुरस्कार इस भाग्यशाली को मिल रहा है। हमारे यहाँ सात जूतों का हार और तीन जूतों का ताज महाराजा ही पहनते हैं।
आप हमारे राज्य में कहाँ से आये हैं? कैसे आये हैं? क्यूँ आये हैं? किसलिये आये हैं? आप कितनी देर तक रहोगे और कब दफा होगे?
हम भारत की राजधानी दिल्ली, बहादुर शाह जफर मार्ग, दिवाने महल से आये हैं और आपकी सुशील कन्या उल्लू की बेटी का इलाज करने के लिये आये हैं।
महामंत्री इन चारों को मेरी लाडली बेटी उल्लू की बेटी के पास ले जाओ शायद इनके इलाज से उसे भूख लग जाये।
जो आज्ञा महाराज।
शुक्रिया महाराज! महाराज उल्लू सेन की जय!

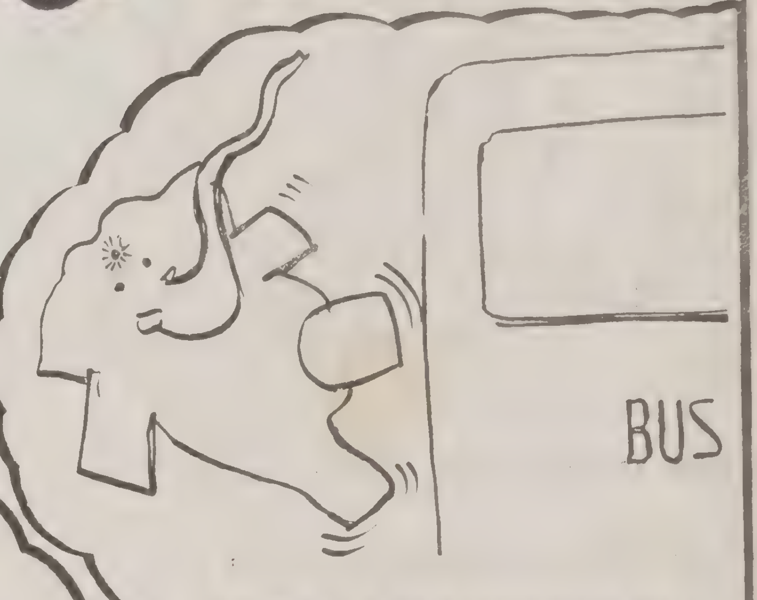

चेला, मोटू, घसीटा और पतलू राजकुमारी को देखने के लिये जाते हैं तो उसका नौकर उन को रोककर कहता है –
तुम चार इक्टठे क्यूँ आयेहो? तुम कौन हो? अभी राजकुमारी जिंदा है! क्या तुम उसको उठाने आयेहो या कंधा देने आयेहो?
हम चारों दुनिया के मशहूर डाक्टर हैं। और राजकुमारी के इलाज के लिये आये हैं।
चारों राजकुमारी के पास जाते हैं और देखते हैं राजकुमारी सपनों की दुनिया में खोई हुई है और किसी उल्लू के बेटे का ख्वाब देख रही है।
राजकुमारीजी उठिये और अपने नाजुक और रसीले होंठ खोलिये और ये पाँच पत्ते जैसे-तैसे करके निगलजाइये। ईश्वर ने चाहा तो आपकी भूख फिर वापिस आजायेगी।
राजकुमारी पत्ते खाती है।
पाँचो पत्ते खाने के थोड़ी देर बाद ही राजकुमारी चिल्लाने लगती है –
मेरे लिये खानालाओ। मेरे नाश्ते के लिये ढाईमन पानी, साठ दर्जन अंडे और लंच में साठ बकरे इक्कीस मुर्गे, पच्चीस तली हुई मछलियाँ लेकर जल्दी आओ। साथ में दाल और सब्जी लाना न भूलना।
महाराज को जब पता चलता है कि राजकुमारी ने भरपेट नाश्ता और लंच किया है। तो वो बहुत खुश होते हैं।
हम तुम पर बहुत खुश हैं! माँगों क्या मांगते हो।
Raghubir Singh



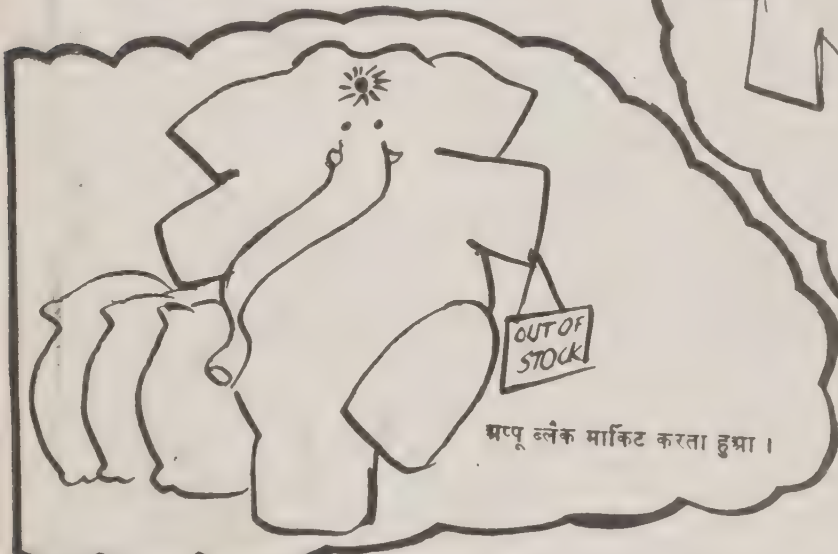
महाराज आपके पास जो चिराग-ए-चीज है उसको अपने जूते में रख कर मेरे तीनो दोस्तों के सर पर सौ-सौ बार मारें ताकि ये फिर कभी गदहा, कुत्ता और तोता न बनें।
महामंत्री, इन की इच्छा पूरी कीजाये और जादूगरनी चुड़ैल के श्राप से मुक्त किया जाये।
मोटू, घसीटे और चेले को सौ-सौ बार जूते मारे जाते हैं।
ढप
मजा आगया!
ढप
और जोर से ।।।। शाबास
ढप
वाह! क्या बात है!
महाराज अब हमें वापस दिल्ली जाने की आज्ञा दें। और हमें दिल्ली वापस जाने के लिये सवारी का इंतजाम करादें।
आप सब उल्लू काठ रथ पर सवार होकर दिल्ली जा सकते हैं।
मोटू, पतलू, घसीटा और चेलाराम उल्लू काठ रथ पर सवार होकर दिल्ली चल पड़ते हैं।
अबे खच्चर की औलाद! आगे देख! दिल्ली लेजा रहा है या जहन्नुम में!
जिंदा रहे तो फिर मिलेंगे।
समाप्त।

अप्पू से आगे

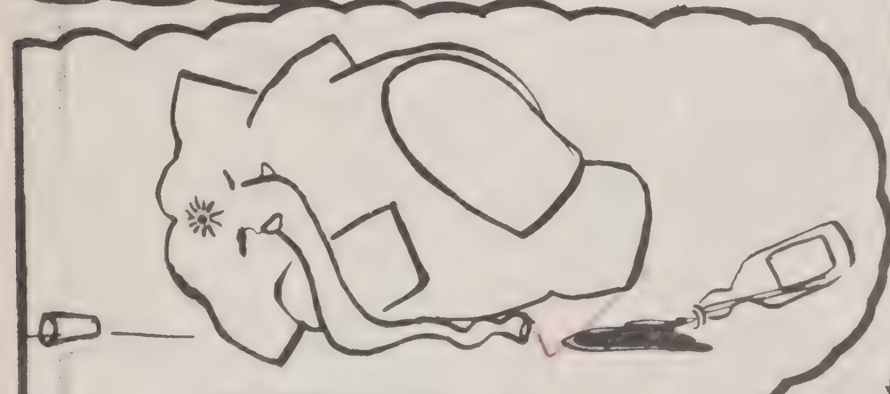
ऐशियाई खेलों के दौरान खेल समाचारों में पत्र-पत्रिकाओं में और टी वी पर प्रतीक चिन्ह अप्पू हर जगह नजर आता रहा। विभिन्न मुद्राओं में और विभिन्न खेल खेलता हुआ। हमारा विचार है कि खेलों की समाप्ति के साथ ही अप्पू को रिटायर न किया जाये। हमारे चारों तरफ और कई तरह के खेल लगातार चलते रहते हैं। उन खेलों को दर्शाने के लिए भी अप्पू का प्रयोग किया जाये जैसे—



अप्पू चलती बस में चढ़ने के प्रयास में गिरता हुआ।



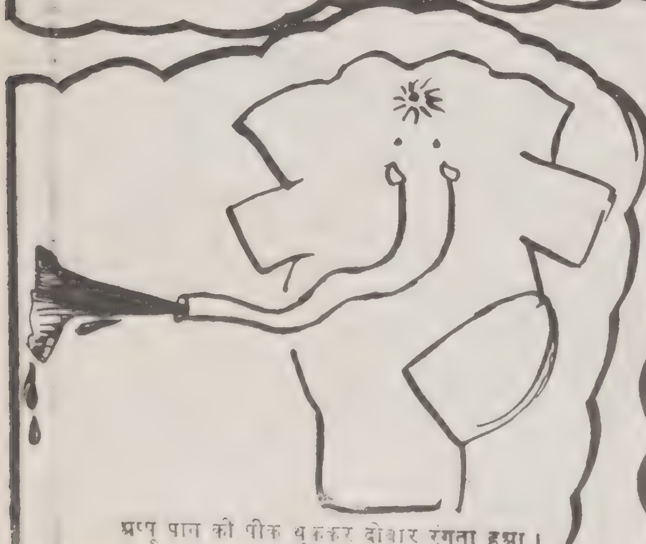
अप्पू ब्लैक मार्किट करता हुआ।



अप्पू जहरीली शराब पीकर मरा हुआ।



अप्पू परीक्षा में नकल करता हुआ।



अप्पू पान की पीक थूककर दीवार रंगता हुआ।



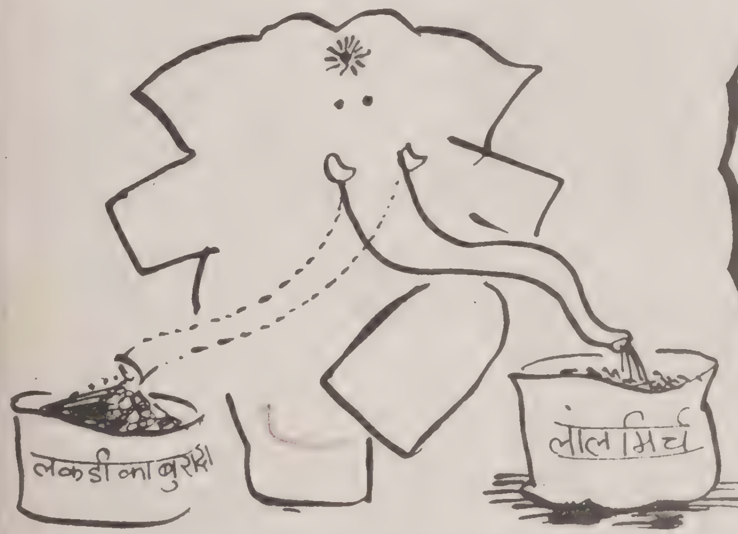
अप्पू दफ्तर में काम के समय के सोता हुआ।



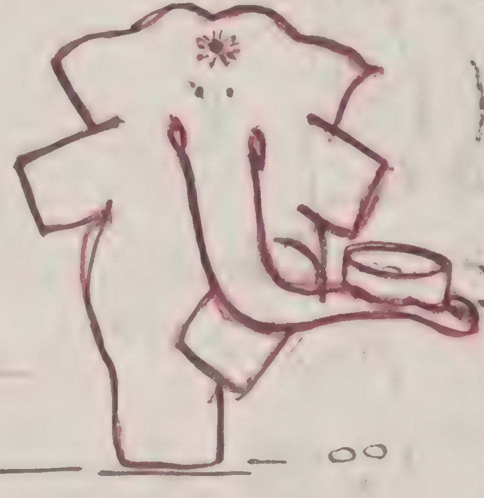
अप्पू नम्बर दो की बही लिखता हुआ।



अप्पू लड़कियां छेड़ता हुआ।



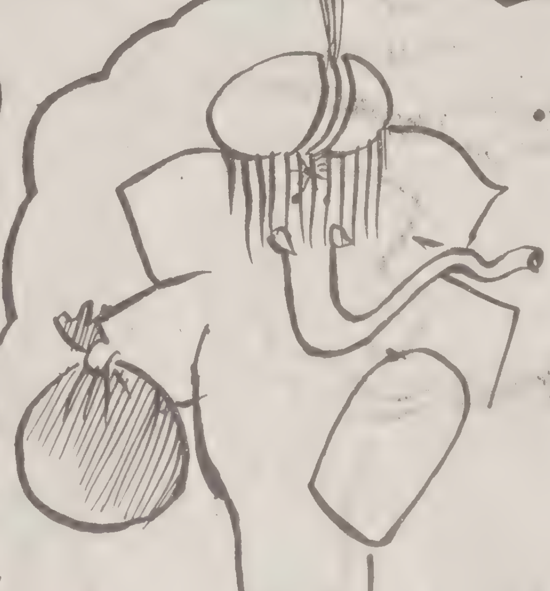
अप्पू मिलावट करता हुआ।



अप्पू भीख मांगता हुआ।



अप्पू रिश्वत लेता हुआ।



अप्पू दहेज लेता हुआ।

नजर अपनी-अपनी
अमीर-गरीब

दुनिया की रीत देखो कैसी [illegible] ...र और गरीब वह कुछ और है। वही गरीब करे तो कुछ और, दुनिया की
... फर्क कितना है ... [illegible] ... नजरों में फर्क कितना है। कुछ उदाहरण देखिये—





गरीब की जोरु पराये मर्द से बात करे तो 'अजी बदचलन है।'
अमीर की जोरु पराये मर्द से बात करे तो 'बहुत सोशल है।'
गरीब की लड़की लफंगे के साथ नजर आये तो 'मां-बाप की नाक कटाने पर तुली है।'
अमीर की लड़की लफंगे के साथ नजर आये तो 'बहुत माडर्न है। डेटिंग कर रही है।'
गरीब की जेब में पड़ा एकमात्र पांच का नोट गिर जाए तो कोई उसे उठा कर देता नहीं।
अमीर की जेब से पांच हजार रुपयों से लदा पर्स गिर जाये तो उठाने वाला उसे अमीर को दे देता है। अखबार में अपनी ईमानदारी का समाचार छपने के लालच में।
गरीब दोस्तों के साथ बैठा ताश खेल रहा हो तो 'वह चंडाल चौकड़ी बैठी है।'
अमीर दोस्तों के साथ बैठा ताश खेल रहा हो तो 'क्लब की मीटिंग चल रही हैं।'

क्यों और कैसे

प्र० : क्या रंगों का शरीर पर कुछ प्रभाव पड़ता है ?

उ० : केलिफोर्निया के मान बाना-रेडियो काउंटी प्रोबेशन डिपार्टमैंट में जब बच्चे उग्र हो जाते हैं और मारपीट करने लगते हैं तो उन्हें एक छोटे से कमरे में बन्द कर दिया जाता है, जिसमें एक बहुत ही विशेष बात होती है—इस कमरे का रंग बब्बलगम के जैसा गुलाबी होना है। पाल-3-बोक्यूमिनी का कहना है कि बच्चे शांत हो. चिल्लाना बन्द कर देते हैं। यहां तक कि दस मिनट के भीतर सो जाते हैं। यह तरीका मेनियक और मानसिक बाल अपराधियों को शांत करने के लिये अपनाया जाता है। इसके विपरीत जोर-जबरदस्ती से उन्हें दंडित कर रखा जाता था। इस नये तरीके को अभी हाल ही में तीन वर्ष से भी कम से प्रयोग किया जाता है।

मि० बोक्यूमिनी का कहना है, 'हमें वास्तव में उनके ऊपर बैठना पड़ता था, परन्तु अब हम उन्हें गुलाबी कमरे में रख देते हैं और वे शान्त हो जाते हैं।'

सभी मनोवैज्ञानिक पूरी तरह विश्वस्त नहीं हैं, पर कुछ को संदेह है। फिर भी अमरीका के 1,500 हस्पतालों के अफसरों को गुलाबी रंग के शान्त करने के प्रभाव का इतना भरोसा तो हो गया है कि उन्होंने कम से कम एक कमरा तो गुलाबी रंग का करवाना आरम्भ कर ही दिया है।

शान्त गुलाबी, जैसा कि इस रंग को कहा जाता है शरीर रंगों के प्रभाव का सबसे अधिक नाटकीय प्रमाण है, हालांकि इस पर सबसे अधिक मतभेद भी रहा है। उन लोगों का जो मानव शरीर पर प्रकाश तथा रंगों के प्रभाव से सेहत और व्यवहार के विषय में खोज कर रहे हैं।

पहले ही रंगों से मस्तिष्क पर काबू पाने के बारे में बहुत-सी डरा देने वाली सैंगों की स्कीमें मौजूद हैं जैसे लाल रंग से रेस्तरां वाले भूख प्रज्वलित करते हैं। अल्टर वायलेट से केविटीज कम होती है और बच्चों की दिमागी क्षमता बढ़ती है और नीले रंग से चिनचिला बच्चों में स्त्रिलिंग से पुर्लिंग करने की अधिक क्षमता मानी जाती है।

औद्योगिक सोसाइटीज में जिनके मेम्बर अधिक से अधिक समय बन्द कक्षों में और प्रकाश में रहते हैं। प्रकाश और रंगों के प्रभाव का महत्व बढ़ जाता है। साथ ही अंतरिक्ष और समुद्र के नीचे मनुष्य के नकली रहने के स्थान बनाने का प्रयास बढ़ता जा रहा है। मनुष्य पर रंग और प्रकाश के प्रभाव की जानकारी बहुत जरूरी है। इसके परिणामस्वरूप प्राचीन क्रोमोथेरेपी जिसकी मान्यता घट चुकी थी फोटो बायलोजी और कलर थैरेपी के नये दामों से फिर आरम्भ हो गई है। मसशूट इंस्टीट्यूट आफ थैरेपी के रिचर्ड जे. वरटमैन जो न्यूटरिशन के विशेषज्ञ है का कहना है "अब यह साफ है कि भोजन के बाद शरीर पर प्रकाश का वातावरणिक प्रभाव सबसे अधिक है।"

कई परीक्षणों से पता चला है कि भिन्न रंगों का रक्तचाप और सांस लेने के रेट के साथ-साथ दिमागी कार्यों और बायोरिदम पर भी प्रभाव पड़ता है। इसके परिणामस्वरूप भिन्न रोगों के उपचारमें रंगों का प्रयोग किया जाने लगा है।

उदाहरण के लिये पिछले दस वर्षों में लगभग 30,000 समय से कुछ पहले जन्म लेने वाले पीलिये से पीड़ित बच्चों के उपचार के लिए रक्त चढ़ाने की बजाय नीले रंग के प्रकाश में नहलाया जाने लगा है।

इंगलैंड में लंदन का ब्लैक फरायर ब्रिज को नीले रंग से पेन्ट किया गया, ताकि उस पर से कूद कर कम लोग आत्महत्या करें। सोवियत यूनियन में खानों में काम करने वालों पर फोटो-बायोलोजी के लीडर अल्टरा वायलेट किरणें डालते हैं, जिससे रूसी वैज्ञानिकों का विश्वास है कि माईनर्स को ब्लैक लंग रोग नहीं होता और सोवियत स्कूलों में फ्लोरोसेंट बत्तियों के साथ अल्टरा वायलेट बत्तियां भी लगा दी गई हैं।

कलर कन्सलटेंट फेयर बिरेन के अनुसार इसके परिणाम स्वरूप, बच्चे साधारण से शीघ्र बढ़ते हैं। वे पढ़ाई में अधिक अंक प्राप्त करते हैं। साथ-साथ आंखों के रोग भी कम होते हैं। मि० बिरेन ने सैंकड़ों लेख और किताबें रंगों पर लिखी हैं और उन्हें इस विषय का माहिर और ज्ञाता माना जाता है।

युनाईटेड स्टेट्स में अल्टरा वायलेट सोरायसिस का मान्य उपचार बन गया है और सफेद फ्लोरेसेंट लाईट और फोटोसन्सीटिसिंग ड्रगस को हर पीस के घावों का इलाज करने में बहुतायन से इस्तेमाल किया जा रहा है। ●

क्यों और कैसे ?

दीवाना पाक्षिक

८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,

नई दिल्ली-११०००२

क्या आप जानते हैं ?

- सप्तर्षि—मरीचि, अंगिरा, अत्रि, पुलह, क्रेतु, पुलास्त्य, वशिष्ठ।
- पंचकन्या—अहिल्या, तारा, कुन्ती, द्रोपदी, मन्दोदरी।
- चार युग—सत्ययुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग।
- पंच रत्न—हीरा, मोती, सोना, पन्ना मूंगा।
- पंच तत्व—पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश।
- दस अवतार—मत्स्य, कूर्म, बाराह, नृसिह, वामन, परशुराम, राम, बलराम, बुद्ध, कल्कि।
- त्रिदेव—ब्रह्मा, विष्णु, महेश।
- मानव शरीर की त्वचा में करीब 20 लाख छिद्र हैं।
- पांच ज्ञानेन्द्रिय—नाक, कान, आंख, जीभ, चर्म।
- सप्त सागर—क्षीर, दधि, घृत, इक्षु, मधु, मदिरा, लवण।
- त्रिगुण—सत्व, रज, तम।
- नौ ग्रह—पृथ्वी, मंगल, शुक्र, बृहस्पति, बुध, वरुण, शनि, अरुण, यम।
- चार वेद—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्वेद।

ताएक्वोन्डो दूसरा पाठ

भाग १

हम अपने ताएक्वोन्डो के पाठ जारी रखते हैं।ताएक्वोन्डो प्राचीन मार्शल आर्ट है जिसे सुपर चेम्प, जिमि जगतियानी सिखा रहे हैं।

कीमा सियोगी मोमटोंग जिरुगी

(होर्स स्टान्स) (सेन्टर पन्च)(D)

(1) मुक्का (पंच) लगाते हुए, हाथ को धीरे-धीरे अंगूठे की तरफ अन्दर को घुमाते जाइये जब तक कि पूरी तरह ऊपर से नीचे घूम जाए, जैसे ही मुट्ठी अपने निशाने पर पहुंचे, साथ ही बांह पूरी तरह फैल जानी चाहिए।

D-1, D-2, D-3 से D-10

(2) मुक्का लगाने में बांह की लचक बेहद जरूरी है, हर रोज एक सौ मुक्के लगाने से आवश्यक बल उत्पन्न हो जाता है।



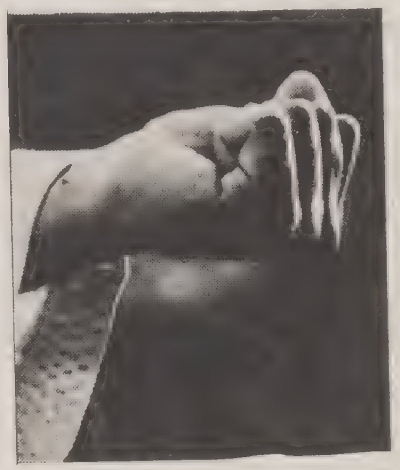
D-1



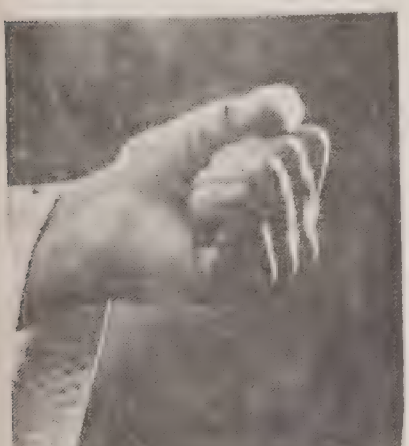
D-2



D-3



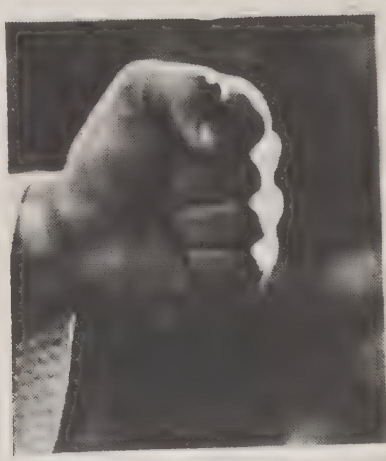
D-4



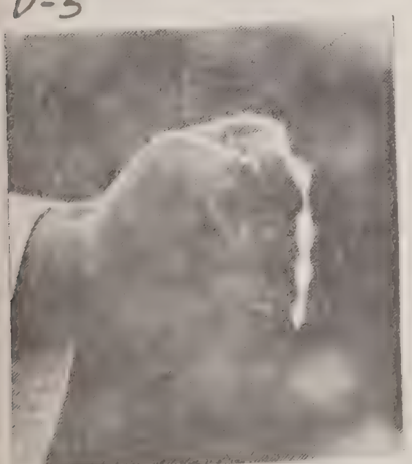
D-5



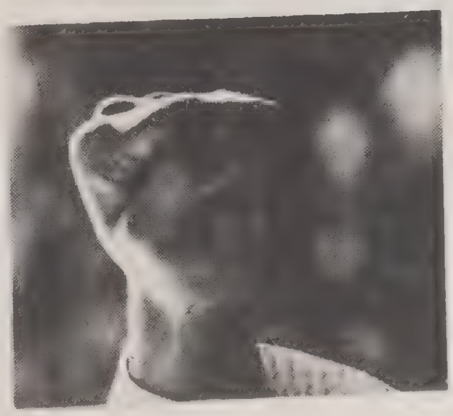
D-6



D-7



D-8



D-9



D-10

शीतल गाइड



कोई बोर करने वाला आगया है और आप उससे जल्दी छुट्टी पाना चाहते हैं तो स्टील की कुर्सी बैठने के लिए दें। कुछ ही देर में उसका आसन ऐसा ठंडा हो जायेगा कि ज्यादा देर बैठ ही नहीं पायेगा।

एक बार फिर सर्दियां आ गई और आप सर्दियों के नाम से ठंडे के ठंडे पड़े हैं। हम इस बार आप में गर्मी लाने के लिए शीतल गाइड छाप रहे हैं कि सर्दियों में आपको क्या-क्या महान् काम करने चाहियें और क्या नहीं करना चाहिये।



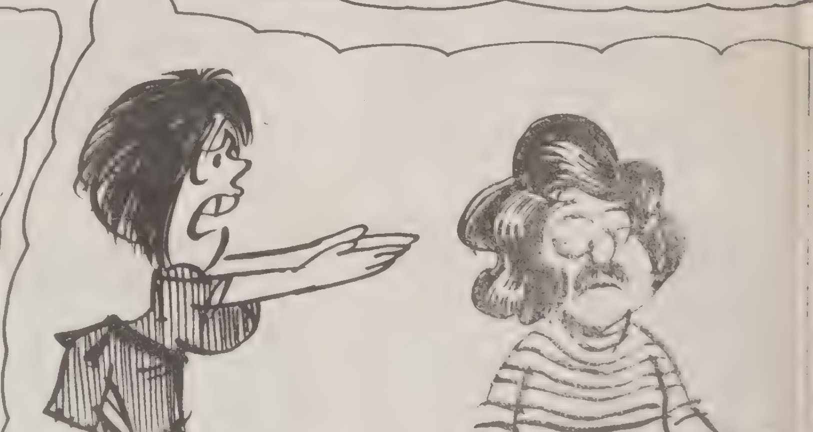
दिन को किसी से कुछ मंगवाया है तो उसकी जल्दी लौट आने की आशा न करें। धूप में बैठ-बैठ कर हर कोई इतना सुस्त हो जाता है कि जल्दी शब्द को डिक्शनरी से निकाल फेंकना पड़ता है।



बीबी से तंग न आयें। सर्दियों में औरतें स्वैटर बुनती रहती हैं। स्वैटर बुनने की सलाई हथियार बन सकती हैं और आप रेलगाडियों में अंधे सूरदास बन गाना गाकर पैसे मांगते नजर आ सकते हैं।



कोई स्कूटर चलाकर आया हो तो सुबह या शाम को उससे मिलने पर हाथ मिलायें तो गर्मजोशी में झटके न दें। उसे गुस्सा आ सकता है। हाथ इतने ठंडे हो गये होते हैं कि झटका लगने पर नश्तर चुभने जैसा दर्द होता।



सर्दियों में किसी के बालों में अंगुलियाँ फेरने की कोशिश न करें। वेशलीन या क्रीम के कारण बाल ऐसे जमे होते हैं कि आपकी अंगुलियां टेढी हो सकती हैं।



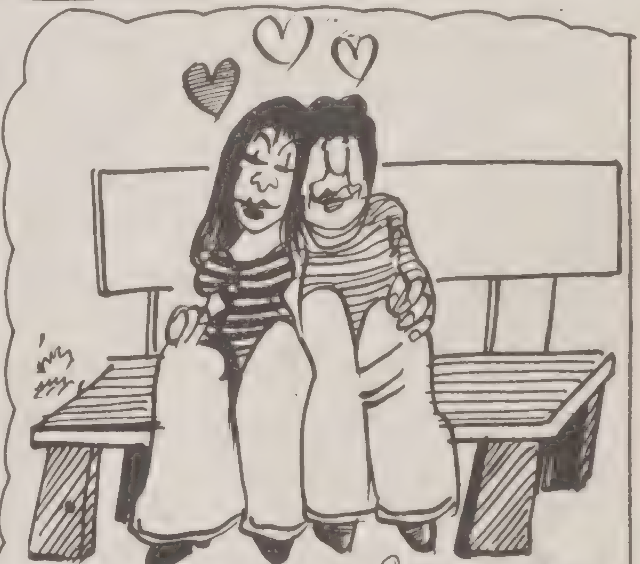
आपकी बालकनी के सामने प्रेमिका की खिड़की है तो खिड़की पर उसके आने की प्रतीक्षा में समय बरबाद न करें। वह सर्दियों में मां के पास किचन में खाना बनाने में मदद कर रही होगी। सर्दियों मे हर किसी को चूल्हे के पास जाने का बहाना चाहिये।



छत पर जाकर प्रेमिका से आंखें चार होने की उम्मीद न करें। छत पर सर्दियों में धूप सेंकने सारा परिवार बैठा होता है। वह बेचारी मजबूर होती है।



सर्दियों में प्रेमिका की गोद में सिर रखकर लेटने का सपना न देखें। सर्दियों में उसकी गोद पर उसके पालतू पिल्ले का जन्म सिद्ध अधिकार होता है।



प्रेमिका को सर्दियों में ले जाकर ऐसी बेंच पर बिठायें जहां धूप न पड़ती हो। वह आपसे सट कर बैठेगी। दूर हटने के लिए नहीं कहेगी।



सर्दियों में खूब डेटिंग करें। खर्चा कम होता है। गर्मियों में आइसक्रीम का खर्च पड़ता है। सर्दियों में मूंगफलियों से काम चल जाता है।



किसी से यह न पूछें कि यह सूट कितने में पड़ा या कौन सा है। आपको धारीवाल ब्रांड झूठ सुनने को मिलेगा। दूसरों को झूठ बोलने पर मजबूर न करें। आजकल महंगाई इतनी है, सूट कौन सिलवाता है? सब कबाड़ी बाजार से खरीद कर लौटते हैं और महंगे दर्जी का लेबल चिपका लेते हैं।



ललित कुमार शर्मा (राजस्थान) : डीयर गरीब चन्द जी इन्सान दुःखी होने पर भी कब हंसता है?

उ० : जब वह देखता है कि उसका पड़ौसी उससे भी ज्यादा दुःखी है।

बलराम कटारिया, कोटा : इस दुनिया में महंगी चीज कौन-सी है ?

उ० : सब चीजें महंगी हैं। बस मुसीबत मोल लेना हो तो वही एकमात्र सस्ती है।

अशोक खुराना 'स्वीटी', कलानौर : मौत महबूब है, अपने साथ लेकर जायेगी फिर भी लोग डरते हैं ?

उ० : वह बिना दहेज दिये साथ ले जाती है न।

वेद प्रकाश 'अमित', दिल्ली : आप पिलपिल सिलबिल के इतने हमदर्द क्यों हैं जबकि वो आपकी परवाह नहीं करते ?

उ० : उनकी बेवकूफियां देख आपको हंसी आती होगी, मुझे रोना आता है। इसलिये हमदर्दी पैदा होती है।

अशोक जौहर 'गगन', देहरादून : गरीब चन्द जी क्या सचमुच आशिक मरते है या मारे जाते हैं ?

उ० : यह पता तो पोस्ट मार्टम के बाद ही लगता है।

अशोक जौहर 'सांवरिया', देहरादून : दुल्हन को डोली में ही क्यों विदा किया जाता है ?

उ० : ताकि उसका पुराना प्रेमी उसे स्लोमोशन में जाता देख सके।

केवल प्रकाश दुग्गा, काशीपुर : जूते पड़ने का समय नजदीक आ रहा है ऐसा कब लगता है ?

उ० : जब उसका जूना पैर की बजाय हाथ में आता है।

गुरमीत सिंह सीता, नई दिल्ली : गरीब चन्द जी आपकी 'वो' कहां है ?

उ० : मेरी वो का पता मेरी बीवी भी जानना चाहती है। यह प्रश्न आप मेरी बीवी की शह पर तो नहीं पूछ रहे ?

परवीण कुमार, जींद : गरीबचंद जी जब कोई आदमी घर वाली को सीख नहीं दे सके उसे क्या करना चाहिए ?

उ० : जेवर या साड़ियों की रिश्वत देकर काम चलाना चाहिये।

शिवचन्द्र खुराना, लुधियाना : अंकल जी, आजकल की लड़कियां अपनी चोटियां आगे क्यों रखती हैं ?

उ० : जमाना बुरा है। पीठ पीछे रखनें पर पता नहीं कब कोई काटकर ले जाये।

अशोक मारकण्डे, राजेन्द्र नगर . गरीब चन्द जी चोर के यहाँ चोरी हो जाये तो वह क्या सोचता है ?

उ० : चोर के घर मोर पड़ गया।

मनोज कुमार पांडये, मथुरा : गरीब चंद जी, यदि आपको भगवान की पदवी मिल जाये तो आप क्या करेंगे ?

उ० : असली भगवान के खिलाफ इन्कवायरी कमीशन बिठाऊंगा।

सतीश अनेजा, सिरसा : डीयर गरीब चन्द जी, ग्यारह दिसम्बर को मेरी शादी है। आओगे ना ?

उ० : शादी के बाद आपको अपनी दुल्हन की साड़ी में छेद नजर आयें तो समझ लेना मैं आया था। अच्छी तरह चैक कर लेना।

मो. एजाज उद्दीन आजाद, पटना सिटी : डीयर चन्द्र जी, लडके आज के जमाने में लड़कियों के क्यों दीवाना हो गये हैं ?

उ० : पहले भी लड़के दीवाना हुआ करते थे जनाब। बड़े-बूढ़ों की बातों का यकीन न करें।

घनश्याम परचानी, खंडवा : इन्सान की बुद्धि काम करना कब बंद करती है ?

उ० : जब किसी हसीना को देख दिमाग का फ्यूज उड़ जाता है।

नरेन्द्र कुमार गुरुदासानी, दिल्ली : अगर इस दुनिया में श्री कृष्ण भगवान होते तो क्या करते ?

उ० : पहले बंसरी बजाते थे अब शायद ट्रांजिस्टर बजाते।

प्र० : अगर हेमा मालिनी प्रधान मन्त्री बन गई तो क्या होगा ?

उ० : जाट राष्ट्रपति बनेगा।

अरविन्द केवलानी 'आकाश', कटनी : अंकल आजकल लव मैरिज कुछ ज्यादा होने लगी हैं क्या बात है ?

उ० : ज्यादा लोग साक्षर हो गए हैं और दस्तखत करना सीख गए हैं।

मधुकर चुटे, धुलिया : गम में इन्सान को क्या करना चाहिए ?

उ० : चिउइंगम खाना चाहिए। गम की ओर से ध्यान हटेगा।

जितेन्द्र साहनी 'नीना', नई दिल्ली : गरीब चन्द जी, मुझे ज्योतिषी ने बताया है कि 1983 में मेरी 10 लाख की लाटरी निकलेगी। क्या आप, आज मुझे 10 रुपए उधार दे सकते हैं ?

उ० : उसी ज्योतिषी से उधार लेकर देखो। यह भी पता लगेगा कि उसे अपनी भविष्यवाणी में कितना विश्वास है।

एक लघुकथा

परिवर्तन

—आजाद रामपुरी

पहले वाला अधिकारी भ्रष्ट था क्या ?

"अरे नहीं साहब।"

"रिश्वत लेता था क्या ?"

"स्वप्न में भी नहीं।"

"काम चोर था क्या ?

"क्या कहते हो साहब, उन जैसा कर्मनिष्ट अधिकारी तो इस जिले में आज तक नहीं आया।"

"फिर किस कारण से उस अधिकारी का ट्रांसफर कराया गया ?

नये अफसर ने कार्यालय का चार्ज लेते हुए अधीनस्थ बाबू से ट्रांसफर का कारण जानना चाहा तो बाबू कहने लगा—

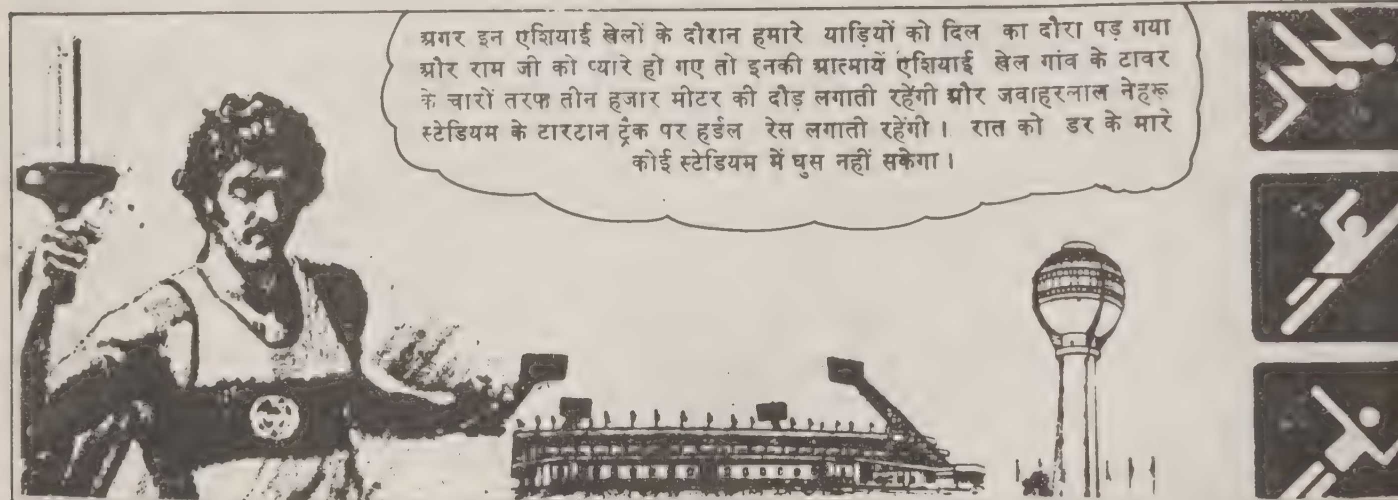
"यहां के नेताओं के साथ उनकी पटरी नही बैठ रही थी और वे यहां की संस्था में परिवर्तन चाहते थे।

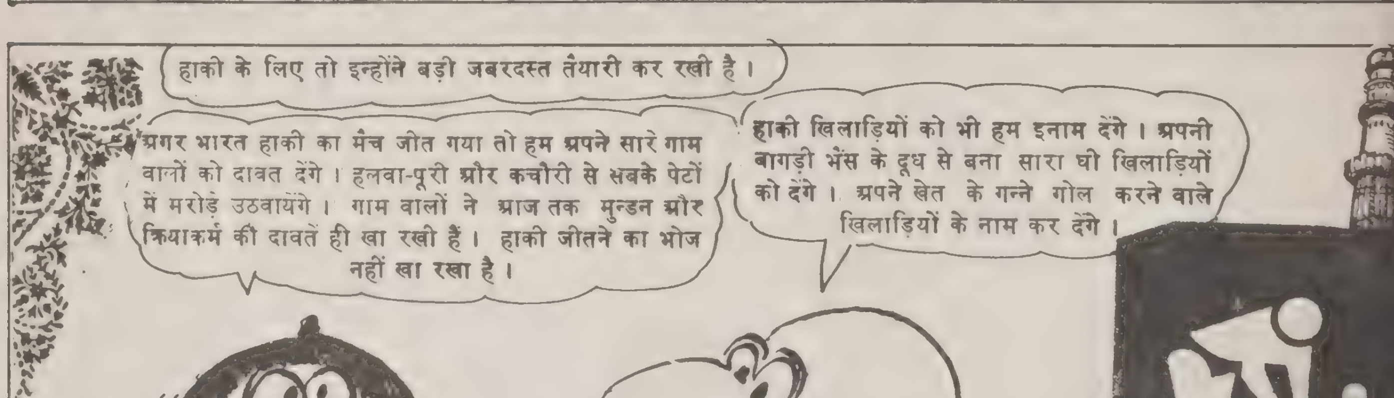
ठीक है अफसर बोला—

कल से यह सब चलने दो।

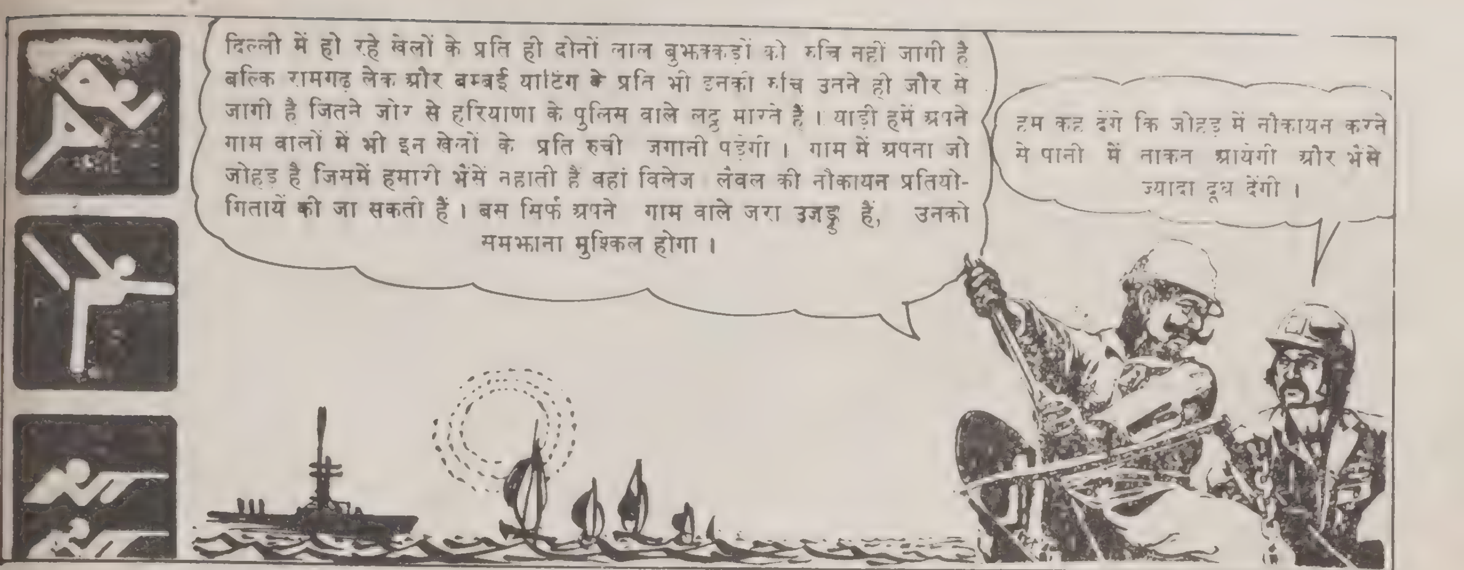

सिलबिल
पिलपिल
भाइयों, ग्राजकल थमारे याड़ी सिलबिल ग्रौर पिलपिल को बुरी हालत है। एशियाई खेल चल रहे हैं ग्रौर दोनों याड़ी दिन भर टी. वी. के सामने बैठे रहते है। पिछला कलर टी० वी० तो इन्होंने ग्रारे से चीर दिया था फिर दोबारा जाकर नया टी० वी० ले ग्राये। इनके मन मन्दिर में ग्राजकल चीनी जिमनास्ट लड़कियाँ फ्लोर एक्सरसाइज करती रहती हैं। इन खेलों ने इनकी लाइफ ही बदल दी है।
इस समय ग्रगर खेलों के दौरान इनको टी० वी० के सामने से उठने की रिक्वेस्ट लेकर रति ग्रग्निहोत्री भी ग्राये तो उसे ये ठुकरा देंगे। गैलीलियो का ग्रर्द्ध गोले सोलह घोड़ों को जुटा कर खींचे जायें तो ग्रलग हो सकते हैं लेकिन इनको टी० वी० के सामने से नहीं हटाया जा सकता। इनके ग्रप्पू को ग्राजकल किसी ने छेड़ने की कोशिश की तो यह उसका मर्डर कर देंगे। इन पर खेलों का काला बुखार सवार है। इनसे बचके रहना।
DIWANA
यह रात भर सोते नहीं। दिन भर खेल पर बहस करते रहते हैं।
भाई क्या बात हो गई। मुझे पक्का यकीन था कि म्हारे हरयाणे की गीता जुत्शी जरूर ग्रब सौ मीटर की दौड़ जीत लेगी। पहले ग्रागे चल भी पड़ी थी बाद में कोरिया की लड़की ग्रागे निकल गयी। क्या गड़बड़ घोटाला हो गया। म्हारी जुत्शी ने तो बागड़ी भैंस का दूध पी रखा था। चावल में घी शक्कर डाल कर भी खाती रही होगी, वह ताकत कहाँ गयी ?
मुझे तो शक है कि कोरिया का लड़की ग्रसली शिलाजीत खाकर ग्राई होगी।
ग्राजकल हमारे डाईनिंग टेबल पर रॉयल लंच पड़ा रहता है। कई तरह के पकवानों से निकलने वाली सुगन्धें हमारे नाकों में फ्रीस्टायल स्वीमिंग करती रहती हैं लेकिन इन महारथियों पर उसका भी ग्रसर नहीं होता। खाना पड़ा रह जाता है, यह टी० वी० देखते रहते हैं। जीवन में पहली बार मैंने इनको खाना छोड़ कर कुछ ग्रौर काम करते देखा है। खाने को बेसती से बचाने के लिए मुझे ही सारा खाना पड़ता है, लिहाजा मेरा ग्रधिकतर समय बाथरूम में ही गुजरता है।


भाई जी इस तरह इन बड़े-बड़े होटलों में आकर रात को खाना खाते हैं यह ठीक है ? बिल देते-देते हमारे तो कपड़े ही उतर गए।
यह होटल भी तो एशियाई खेलों के लिए बने हैं। अगर इन होटलों को घाटा होगा तो खेलों की बेमती होगी। हमारा फर्ज और कानून यही है हम अपने कपड़े उतरवायें। खेलों का झंडा ऊँचा रहे।

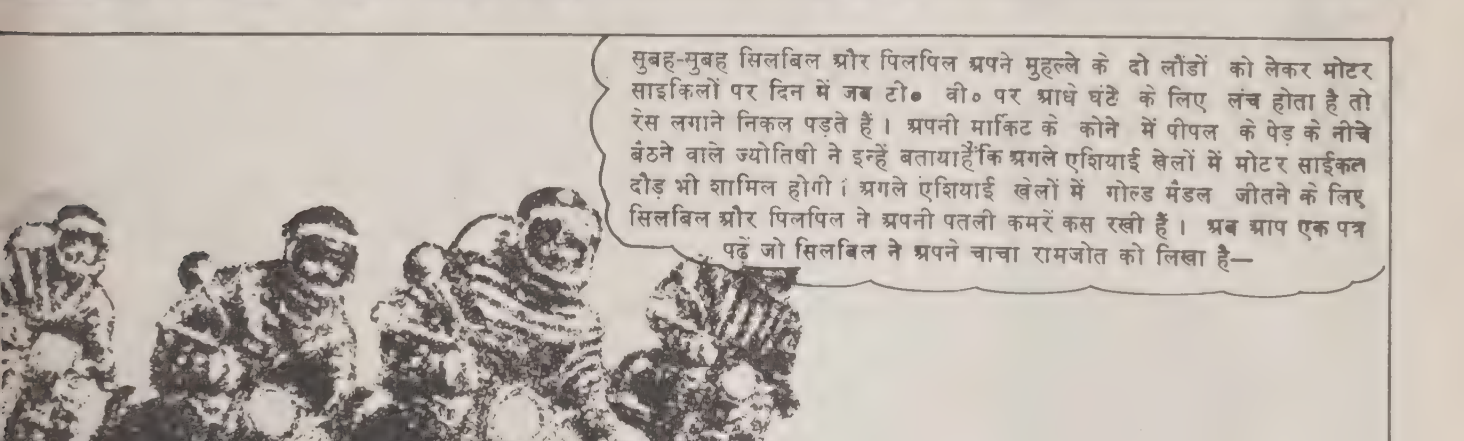

अगर इन एशियाई खेलों के दौरान हमारे याड़ियों को दिल का दौरा पड़ गया और राम जी को प्यारे हो गए तो इनकी आत्मायें एशियाई खेल गांव के टावर के चारों तरफ तीन हजार मीटर की दौड़ लगाती रहेंगी और जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम के टारटान ट्रैक पर हर्डल रेस लगाती रहेंगी। रात को डर के मारे कोई स्टेडियम में घुस नहीं सकेगा।

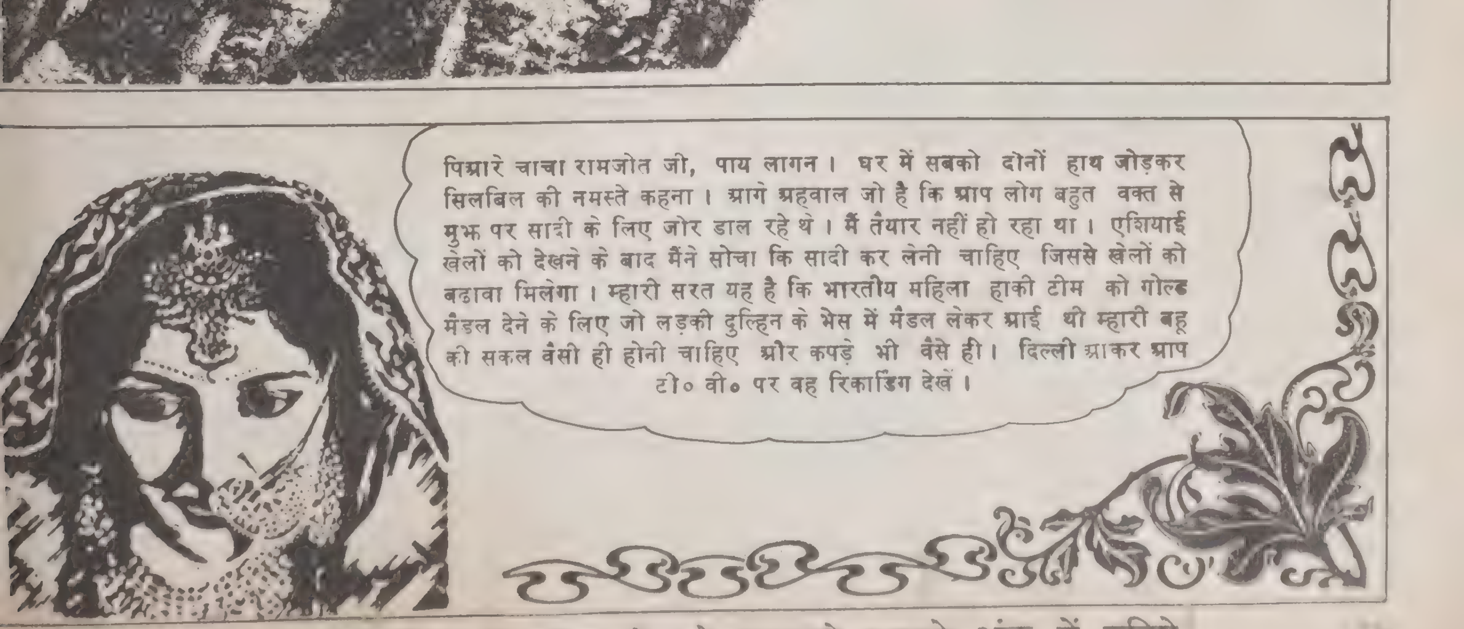

हाकी के लिए तो इन्होंने बड़ी जबरदस्त तैयारी कर रखी है।
अगर भारत हाकी का मैच जीत गया तो हम अपने सारे गाम वालों को दावत देंगे। हलवा-पूरी और कचौरी से सबके पेटों में मरोड़ उठवायेंगे। गाम वालों ने आज तक मुन्डन और क्रियाकर्म की दावतें ही खा रखी हैं। हाकी जीतने का भोज नहीं खा रखा है।
हाकी खिलाड़ियों को भी हम इनाम देंगे। अपनी बागड़ी भैंस के दूध से बना सारा घी खिलाड़ियों को देंगे। अपने खेत के गन्ने गोल करने वाले खिलाड़ियों के नाम कर देंगे।


आजकल सिलबिल और पिलपिल अपनी विलायती घड़ी में अलार्म लगा कर सुबह तीन बजे उठते हैं और अपने ट्रैक सूट पहन कर—
दौड़ लगाने के लिए निकल पड़ते हैं और सारे पड़ौसियों को जगाते हुए इंडिया गेट की तरफ चल पड़ते हैं और वहाँ से हनुमान मन्दिर चल पड़ते हैं जहां वह सवा सेर लड्डू भारतीय खिलाड़ियों के नाम से चढ़ाते हैं।









सिलबिल पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये

मूवी मसाला



रलहन के शिकार

ओ. पी. रलहन में जवान लोगों के लिए कमजोरी है खासकर टीनऐज लड़कियों के लिये, जो फिल्मों की चमचमाती दुनिया से चकाचौंध हुई होती हैं। याद है 'अशोका दी ग्रेट' के लिये उन्होंने कितने भारी कलाकार की खोज की थी।

औफिशियल पार्टियों तक में रलहन के साथ कई जवान लड़कियां होती हैं और उनके माता पिता को इससे परेशानी न हो इसका उन्होंने एक बहुत ही अनोखा तरीका अपनाया है, वे लड़कियों से कह देते हैं तुम्हें फिल्मों में काम करने के लिए नाच सीखना पड़ेगा। नाच सीखने के लिये वे उन्हें गोपी कृष्ण के पास भेज देते हैं, बेशक गोपी कृष्ण का अपना भी उल्लु सीधा होता है।

एक बार किसी के रलहन द्वारा भेजी गई लड़कियों के बारे में पूछने पर बहुत लड़कियां लाइन में खड़ी कर गोपी कृष्ण बोला 'ये सब रलहन की शिकार हैं'।



राज का फ़िल्म 'रोग'

याद है राजकपूर ने जोर-जोर से कहा था कि 'प्रेम रोग' निर्देशक के जैसे उनकी आखिरी फिल्म होगी। वे अपने बैनर की पहली कुछ फिल्मों के फेल हो जाने से इतने परेशान हो गये थे कि उन्होंने अपनी फिल्म 'बीवी ओ बीवी' और 'सत्यम शिवम सुन्दरम' वाले बैनर का नाम भी बदल दिया, अपने पुराने बैनर को पलट कर उन्होंने के. आर. (कृष्णा राज) अपनी पत्नि के नाम पर कर दिया।

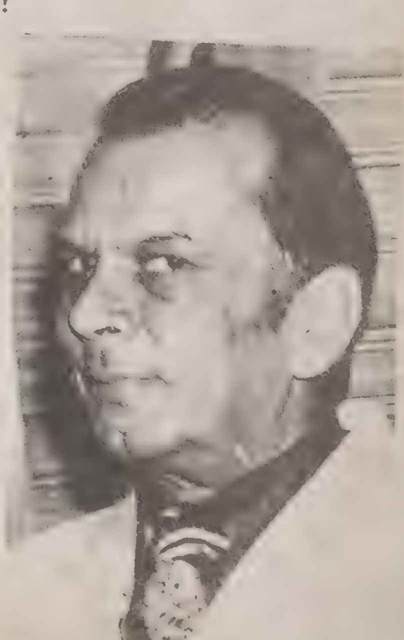
और यह पहली बार थी जब डिस्ट्रीब्यूटर्स ने उनकी फिल्म के लिए उनकी मनचाही कीमत देने से इन्कार कर दिया था।

'प्रेम रोग' की सफलता के साथ ही राजकपूर अपनी बात भी भूल गये और वे उन लोगों से जोरदार बदला लेने के मूड में हैं जिन्होने पहले उनकी फिल्म की फू फू करी थी।

अब वे बड़ी गम्भीरता से अपनी नई फिल्म 'परमवीर चक्र' जिसमें अपने सबसे छोटे बेटे चिम्पू को लीडिंग रोल देना चाहते हैं, को बनाने की सोच रहे हैं।

जौनी वाकर और महमूद

'रिश्ता कागज का' की आउटडोर शूटिंग पर जानी वाकर से भेंट हुई। जानकर बहुत ही हैरत हुई की उन्होंने अपने जीवन में शराब को कभी हाथ भी नहीं लगाया है। वास्तव में उन्होंने अपनी पहली फिल्म आखिरी पैगाम में शराबी का रोल किया था जहां से इन्होंने अपना फिल्मी जीवन आरम्भ किया था। परन्तु यह उनका असली नाम नहीं है। फिल्म में शराबी के रोल की प्रशंसा होने के कारण ही इन्होंने स्वयं को शराबी समझे जाने के वास्ते अपना नाम जानी वाकर रख लिया था। क्या यह अच्छा न होता जैसे यह शराब नहीं पीते उसी प्रकार विनम्र भी होते? उन्होंने आश्चर्य चकित कर देने वाले अन्दाज में कहा, मैं सबसे बड़ा कोमिडियन हूं चार्ली चेपलिन से भी बड़ा? और महमूद बारे में वे क्या सोचते हैं?



शेष पृष्ठ ३१ पर


फैण्टम- गुमनाम कमाण्डर
'जाकल' मुझे नहीं मालूम मैं तुम्हारी ऐसी बातों में क्यों आ गया!
शान्त होओ! ....यह गोलियां खा लो, मैं तुम्हें दिखाता हूं!
जब मैंने तुम्हें बताया था कि इस बूढ़े से हमें क्या मिल सकता है, उसके लूटने को तुम्हारे पीछे नहीं पड़ा था....!
गुड़क!
वाह! क्या ये कीमती हैं?
तुम क्या समझते हो, बेहद कीमती, अब तबियत बेहतर हुई?
© 1980 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved.
FALK & BARRY 11/19
यह वह आदमी है जिसे मारपीट कर लूटा गया था भाग्य से जिन्दा है।
उन्होंने क्या चुराया?
मैं ओबान्गी का हूं उसने मेरी जाति की पूरे साल की मेहनत छीन ली!
ओबान्गी, मोती गोताखोर!
FALK & BARRY 11/20
हर रोज हमारे लोग मोती निकालते हैं, हमारी जाति का धन!
चालीस साल से मैं निकले मोतियों की फसल मोवीटान की मंडी ले जाता रहा हूं, मुझे कोई डर नहीं था।
© 1980 King Features Syndicate, Inc.
हमारे जंगल में आज से पहले कभी भी चोर नहीं थे!
ओबान्गी वासी! क्या तुमने उन्हें देखा था?
हालाकि मैं बूढा और कमजोर हूं फिर भी उन कायरों ने मेरी पीठ पर हमला किया था!
FALK & BARRY 11/21
बूढ़े ने चोरों को देखा नहीं राजा लिओन्टो, फिर तुम्हें कैसे मालूम उन में से एक तुम्हारा बेटा है?
मेरे भतीजे, इस लड़के ने अपने भाई को देखा था!
मैं झाड़ियों में खरगोशों को डराने के लिये छुप रहा था
© 1980 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved
मैंने देखा भी था और सुना भी था,''
लल्लोनी!
FALK & BARRY 11/22


मैंने चोरों को देखा, एक ललोनी था, मैं अपनी जान बचा कर भागा!
उसके पीछे!
मेरा भाई ललोनी, मुझे विश्वास नहीं हुआ. मैं सदा उसका आदर करता था। इतना अच्छा इतना बलवान!
बहुत देर हो गई!
मेरा इतना अच्छा बेटा, वह कैसे बदल गया?
राजा लिओन्टो इसका पता हमें उसके मिलने के बाद ही चलेगा
FALK & BARRY 11/24
मेरे फौजियों ने उसे ढूंढ़ा, पर वो कहीं चला गया है!
कहीं बहुत दूर, शहर को, यहा मोतियों की कोई मंडी नहीं है!
मैं बहुत शर्मिंदा हूं, हम जंगल वासियों को अपनी ईमानदारी पर नाज है अपनी जंगल की राहों पर ....
फैन्टम तुम्हें मालूम है मैंने तुम्हें क्यों बुलाया है? उसकी जान बचाने को।
?
FALK & BARRY 11/25
हमारे जंगल और गांवों में कभी शहर जैसे अपराध नहीं होते!
राजा लिओन्टो!
ललोन्गो के एक सैनिक द्वारा ओगानी के एक बुजुर्ग का पीटा जाना और लूटा जाना, जनता में गुस्सा फैला देगा।
©1980 King Features Syndicate, Inc World rights reserved
मेरी तुम से प्रार्थना है कि तुम उसे सबसे पहले ढूंढ़, उस की जान बचा लो!
वे मेरे बेटे को देखते ही मार देंगे।
मैं कोशिश करूंगा!
FALK & BARRY 11/26
'जकाल' बहुत हो गया, अब हम यहां से निकल चलते हैं!
ललोनी मुझे पीठ न दिखाओ, लो ये खालो!
'जकाल' यह क्या चीज है?''
मैंने तुम्हें बताया था ताकत की दवाई है!
वो आ रहा है, अब की बार सोना हाथ लगेगा!
'सोना'! मैं तैयार हूं!

'महमूद कोई कलाकार नहीं है, उसकी उड़ती हुई कामयाबी का कारण तो वे दो धारे डायलाग थे जो जनता ने पसन्द किये। वे उन से थक गये और महमूद अब फिल्मों से बाहर पहुंच गये।

सोचा था थोड़े लोग अपना दिमाग ठिकाने रखते हैं और अपने साथियों के विषय में बुरी बातें नहीं करते।



शेखर कपूर की दोहरी शताब्दी

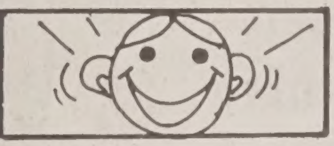
शेखर कपूर ने अपनी फिल्म 'मासूम' लगभग पूरी करली है, इसमें सैयद जाफरी का महत्वपूर्ण रोल है, शेखर कहता फिर रहा है कि उसने जाफरी से बहुत ही सुन्दर अभिनय करवाया है। उसका कहना है उसकी पहली शताब्दी में मेघा से विवाह कर पूरी हुई थी तो दूसरी सैयद को एक महान कलाकार बना पूरी हो गई। बड़बोला शेखर जाफरी के शतरंज के खिलाड़ी, 'एक बार फिर' और 'चश्मेबद्दूर' के सफल अभिनयों को कैसे भूल गया।

मनोज का दिमाग भी चढ़ गया

कभी सोचा भी न था कि मनोज का दिमाग भी 'क्रांती' की भारी सफलता से खराब हो जायेगा. खैर यह तो ठीक है, परन्तु ऐसी क्या बात है कि सब का श्रेय वे अपने पर ले रहे हैं? और उन्होंने आखिर अपना निशाना इतने पुराने सफल कलाकारों को ही क्यों चुना? क्योंकि वह खुले आम कहते फिरते हैं कि प्राण को मैंने उपकार में अच्छे आदमी का रोल दे नया जीवन दिया। साथ ही दिलीप कुमार को भी मैंने ही क्रांती में रोल दे रिटायरमैंट से निकाला है।

लगता है कामयाबी ने इनका दिमाग खराब कर दिया अन्यथा ये अपना 'भारत' रूप ऐसी ओछी बातें कर नष्ट करते न फिरते। ●

हंसना मना है



एक गंवार पहली बार रेलवे स्टेशन पहुंचा और टिकट लेने के बाद किसी से पूछा कि मैं रेल को पहचानूंगा कैसे?

व्यक्ति ने उत्तर दिया रेल काली होती है और उसके मुंह से धुंआ निकल रहा होता है। अभी थोड़ी देर में तुम स्वयं ही देख लेना। ज्यों ही आये झट चढ़ जाना, नहीं तो यहीं रह जाओगे।

थोड़ी देर में गंवार को एक टी.टी. आता दिखाई दिया। सर्दी का मौसम होने के कारण उसने काली पोशाक पहनी हुई थी और मुंह में सिगार लगा रखा था। धुंए की एक मोटी धार उसके मुंह से निकल रही थी। वह था भी बहुत जल्दी में।

गंवार ने आव देखा न ताव कूद कर उसकी पीठ पर सवार हो गया।

टी. टी. ने गुस्से से कहा 'अबे यह क्या कर रहा है'?

गंवार ने पीठ पर चढ़े चढ़े ही टिकट आगे बढ़ाया और कहा 'मरे काहे जाव हो गाड़ी बाबू, हम टिकस ले लीन है।'

●

एक मित्र के देर से आने पर जब दूसरे ने कारण पूछा, तो पहले ने बताया कि मैं जो भी काम करता हूं इतनी लगन से करता हूं कि उसमें डूब जाता हूं, फिर मुझे कुछ होश ही नहीं रहता।

पहला मित्र सहानुभूति दिखाते हुए, आखिर तुम तैरना क्यों नहीं सीख लेते।

●

राजू सिपाही से—''आप बहुत डरपोक हैं'?

सिपाही—क्यों?

राजू—'हर वक्त मारे डर के कंधे पर बन्दूक जो लादे फिरते हो।'

एक बहुत ही अधिक गर्मी के दिन जब उनके घर कुछ मेहमान भोजन के लिए आये तो, चार वर्षीय लड़के से उसकी माँ ने भोजन से पूर्व भगवान् का धन्यवाद करने को कहा—

'परन्तु मुझे नहीं मालूम क्या कहना है', लड़का बोला।

'ओह! बस वही बोलो जो तुमने कहते सुना हो।'

'हुक्म मानते हुए लड़के ने नीचे सिर किया और धीरे-धीरे बोलना शुरू किया', 'ओह प्रभु, भला ऐसी भयंकर गर्मी के दिन मैंने उन लोगों को भोजन की दावत क्यूं दी।'

●

चाल की कोठरी के एक स्कूल की अध्यापिका ने मिसेज रोसी को एक नोट भेजा—'तुम्हारे पुत्र जोन में से बदबू आ रही हैं, उसे नहला दो।'

मिसेज रोसी भी उतनी ही तेज थी, उत्तर दिया, 'मेरा बेटा जोन कोई गुलाब का फूल नहीं है उसे सूंघो न, पढ़ाओ!'

प्रायश्चित

"एस० पी० साहब मुझे बचा लो! मैंने एक नहीं चार लोगों की हत्या दिन दहाड़े फरसा मार कर की है!"

एक भयाकुल देहाती युवक एस० पी० साहब के बंगले में घुसते ही उनके पैरों में लुढ़क-पुढ़क हो गया। एक हत्यारे को अपने चरणों में लोटा हुआ देख एस० पी० साहब के अधरों पर बलात ही मन्द मन्द मुस्कान खिल उठी। उन्होंने हत्यारे को अपनी बलिष्ठ बांहों से उठा कर कुर्सी पर बिठाते हुये कहा—

"देखो अब तुम्हें किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करना चाहिये। चाहे चार लोगों को मार कर आये हो या आठ लोगों को। मैं तुम्हें साफ बचा जाऊंगा—लेकिन तुम्हें मेरे कहे अनुसार एक काम अवश्य करना होगा!"

"वह क्या!" अपराधी ने शान्त्वना पाने के बाद भी घबड़ाहट से पूछा तो एस० पी० साहब अपनी डायरी में छिपाकर रखे एक चित्र को बताते हुए उसे समझाने लगे—

"तुम्हें इस ठिगने कद वाले डी० एस० पी० को भी ठिकाने लगाना होगा!" साले ने बड़ा सिर दर्द पैदा कर रखा है। कभी मेरे खिलाफ अपने रिश्ते में पड़ने वाले मंत्री के कान भर देता है तो कभी छुटभैया नेताओं से मेरी शिकायत करवाता रहता है!

"लेकिन हुजूर"—

"देखो लेकिन-वेकिन कुछ नहीं, करवाने को तो मैं इस हल्के से काम को किसी भी गुण्डे से करवा सकता हूं—या किसी पुलिस सिपाही से भी! किन्तु उसमें सफलता की गारन्टी बहुत कम है। फिर जिला पुलिस पर हत्या के आरोप का अर्थ सीधे-सीधे मेरी पदावनति! इसलिये मैं यह काम तुमसे ही कराना चाहता हूं। तुम समझना-तुमने चार नहीं पांच लोगों को मौत के घाट उतार दिया था।

वह तो ठीक है एस० पी० साहब, लेकिन मैं तो प्रायश्चित करने आपके पास आया था और आप उलटे मुझ से एक और जघन्य अपराध कराने की ....!"

हत्यारा अपनी बात पूरी भी नहीं कर पाया था कि पहले से उसकी बातों के रुख को भांप रहे एस० पी० साहब का जोर का थप्पड़ उसके गालों पर पड़ा—हत्यारे की आंखों के सामने एकदम अंधियारा छा गया। एस० पी० साहब गुस्से के मारे बड़बड़ा रहे थे!

"साले की चमड़ी में भुस भरवा दूंगा—जब मैं तुम्हारे लिये चार हत्याओं का मामला रफा-दफा करवा सकता हूं तब तू मेरे लिये एक हत्या और नहीं कर सकता!"

अर्द्धरात्री का सूर्य

नोरवे का कविता का नाम अर्द्धरात्री का सूर्य है। इस देश में अप्रैल के अन्त से अगस्त के मध्य तक कोई रात का वास्तविक अंधकार नहीं होता, वरन् एक लम्बी शाम का सा प्रकाश फैला रहता है। यहां के उत्तरीय भाग में तो ग्रीष्म काल के दो महीने सूरज पूरी तरह बिल्कुल छिपता ही नहीं है। अलबत्ता सर्दियों के दो माह इस उत्तरीय भाग के लोग इतने भाग्यशाली नहीं रहते, इन दिनों यहां सूरज पूरी तरह निकलता ही नहीं है, यहां तक कि दोपहर का भोजन भी ये लोग प्रात: के धीमे प्रकाश में ही करते हैं।

चित्र वर्ग पहेली
१० रु. इनाम जीतिये

शब्द बनाइये—नीचे बेतरतीब से दिये अक्षरों को आप ठीक क्रम में रखें तो सार्थक शब्द बनेंगे। उन्हें ठीक क्रम में साथ दिये वर्गों में भरें। दायीं ओर के चित्र के सवाल का मजेदार जवाब पाने के लिए बायीं ओर भरे वर्गों को नीचे नये क्रम से रखें।

ला ह त मि ट

त र गा ज

वा म खों ला चे

न आं ग

का न म ली स

इ वा ज न अ

सही उत्तर :—

अन्तिम तिथि— ८-१-८३



नाम ——————————

पता ——————————

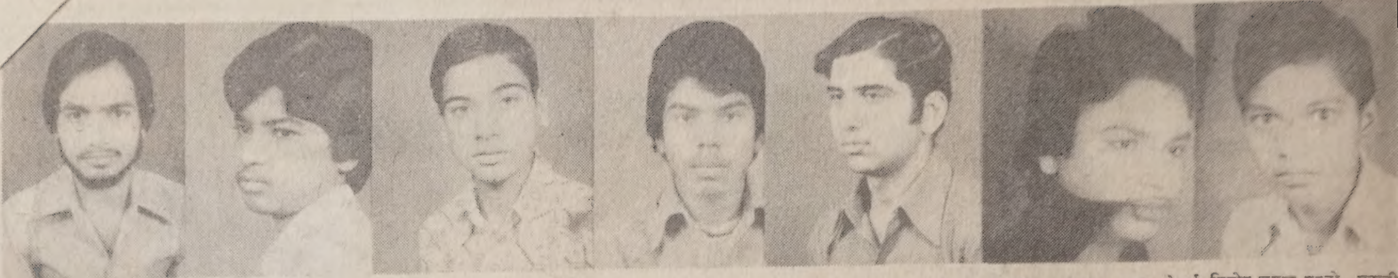


अंक : २१ में प्रकाशित चित्र वर्ग पहेली का सही हल

लाकेट धारी, कुनमुनाया, इकरारनामा, सचेतक, कमनीयता,(के ना क चे नी) नाक के नीचे (सही हल)

विजेता : लालचन्द, कश्मीरी गेट, दिल्ली।





अशोक कुमार बंसल द्वारा जी. डी. ट्रेडर्स, बेलनगंज, आगरा, 22 वर्ष, टिकट संग्रह करना।

ललित कुमार पुरोहित उर्फ राबिन्सन पुत्र श्री हरीराम जी पुरोहित, वीर मोहल्ला, 18 वर्ष

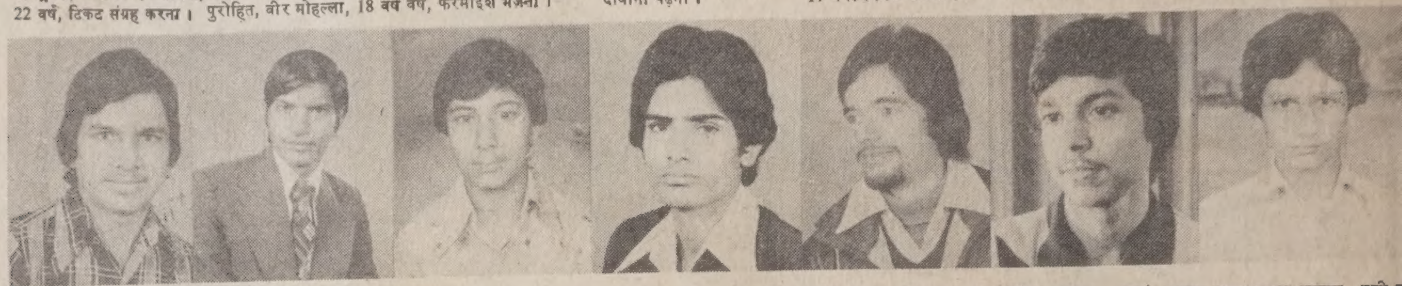
विजेन्द्र शर्मा, एम. सी. डब्ल्यू, सेन्टर, तुगलकाबाद, दिल्ली, 18 वर्ष, फरमाईश भेजना।

हरदेश कुमार मेहता, कृष्णनगर, दिल्ली, 17 वर्ष, फिल्में देखना, दीवाना पढ़ना।

गोपाल विधवानी, त्रिजलाल छाँगोमल, सर्कल नं० 23, वर्षा, 17 वर्ष: क्रिकेट खेलना।

सलीम अहमद. एवन टेलर्स घोंडा, दिल्ली, 19 वर्ष, शायरी करना, फिल्म देखना।

विनोद कुमार महतो, महाबी चौक, महरसा, 16 वर्ष, संगी सीखना।



प्रदीप कुमार ग्लैमर, 46 शहीद रोड, गया (बिहार), 22 वर्ष, संगीत सीखना।

मुकेश कुमार जैन 'पारस' नई दिल्ली, 21 वर्ष, अभिनय करना दीवाना पढ़ना।

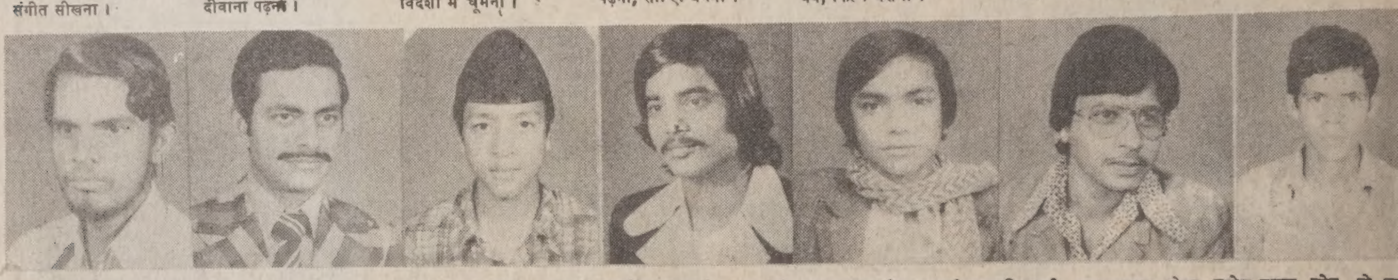
राकेश कुमार, म० नं० 210, इमली रोड, रुड़की, 18 वर्ष, विदेशों में घूमना।

पवन कुमार सोनी, नया बाँस, सुजानगढ़, (राज०), दीवाना पढ़ना, सी. ए. बनना।

सुनील गुप्ता, रवि प्रकाश आनंद आनन्द भवन, गौहाटी, 21 वर्ष, फिल्म देखना।

सुरेन्द्र खुराना 'पप्पू' पुराना बाजार, मोगा, पंजाब, 22 वर्ष, रेडियो पर फरमाईश भेजना।

अजय कुमार आहूजा, गली न 3, मलोट, फरीदकोट, पंजाब 13 वर्ष, टेबल टेनिस खेलना



सैयद इस्माईल अली बुखारी, बुखारी मंजिल, 10 कपासन, जिला चित्तौड़गढ़, 24 वर्ष।

हरीश मखीजा, 181, तुराव नगर, गाजियाबाद, 26 वर्ष, पत्र व्यवहार करना।

नरेश कुमार श्रेष्ठ, बागमती अन्चल काठमांडो, नेपाल, 18 वर्ष, पत्र-[illegible] करना।

रजनीश कुमार रोमू, एम. जी. रोड, खगड़िया, (बिहार), 21 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

कमल कुमार जैन द्वारा चौथमल काला, पो. बा. नलबाड़ी, असम 16 वर्ष, लेखन, पढ़ना।

गिरधारी लाल अग्रवाल, पोस्ट बलियापुर, धनबाद, बिहार; 24 वर्ष, दीवाना पढ़ना।

मनोज कुमार रबेर, पो. पट्ट ब्लाक के पास, जिला प्रतापग 15 वर्ष, क्रिकेट खेलना।



अरविन्द राज पुरोहित द्वारा सपनराज आहूजा, रखलाना कालोनी, बीकानेर, 20 वर्ष।

डा० कमलेश्वर प्रसाद, नरदेवी मा० चि० काठमांडो, नेपाल, 35 वर्ष, डाक्टरी करना।

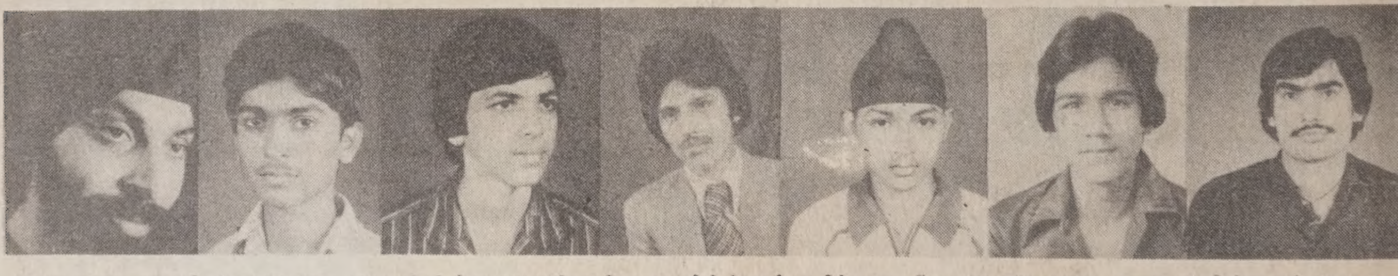
महेश गुप्ता, 38/2, न्यू पला-सिया. इन्दौर, 20 वर्ष, कहा-नियां, चुटकले, कविता।

सुखविन्द्र सिंह औड़ा, डब्ल्यू-जैड 36 सी/2, कृष्णा पार्क, तिलक नगर, नई दिल्ली, 19 वर्ष।

पूनमराज, सदर थाने के सामने लाल मन्दिर के पीछे, बीकानेर, 4 वर्ष, हंसते रहना।

किशोर भगबानी, जगमल चौक, बिलासपुर, (म. प्र.), 17 वर्ष, लिखना व पत्र-मित्रता।

राजकुमार सम्सेए थापा, 9/2 थापा थौल, काठमांडो, नेपाल 19 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।



एम. एस. गुजराल, एन. आई. सी, लि. करनाल, 25 वर्ष, फरमाईश भेजना।

प्रवीण कुमार गुप्ता, 126-ए, मेन बाजार, लक्ष्मी नगर दिल्ली 16 वर्ष, कामिक्स व दीवाना।

संतानी जैराम, 117, गांधीनगर अकौला, 18 वर्ष, पत्र मित्रता करना, गाने गाना।

विश्व प्रसाद जोशी, नेपाल बैंक लि० सि० अ० बीरगंज, नेपाल 21 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

स. विरेन्द्र पाल सिंह, 294, लाजपत नगर, अलवर, 17 वर्ष दीवाना पढना, दोस्ती करना।

मुकेश कुमार, वबालय एवं गांव, गुजरात, 20 वर्ष, माड-लिंग आदि।

हरिओइम शर्मा, 30/75, किद-वई पार्क आगरा, 21 वर्ष, पत्र-मित्रता करना, घूमना।



अनिल शूर 'आजाद', अहीर कालेज क्वाटर्ज, क्वाटर नं. 2, 18 वर्ष, दीवाना पढ़ना।

लाल टी. बचानी, देहली गेट के बाहर अजमेर, (राज०), 25 वर्ष, दीवाना पढ़ना।

शिव भगवान फखया, सदर बाजार, रामगढ़. 18 वर्ष, समाज की सेवा करना।

पंडित किशोर चटर्जी, एच 6-55, साउथ पार्क जमशेदपुर 29 वर्ष, तंत्र विद्या सीखना।

नरेन्द्र पाल द्वारा श्रीराम आसरा बुधराज, म. नं. 726, 17 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

हमारा पता : दीवाना फ्रैंड्स क्लब,
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ——————————

पता ——————————

——————————

आयु ———— शौक ————

दीवाना फ्रैंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

तेज प्रेस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिये पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित, प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता